॥ श्रीः ॥

बृहत्सामुद्रिकशास्त्र ।

(स्त्रीपुरुषलक्षण.)

अयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरखीरीनिवासिज्यो-
तिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकासहित ।

इसको
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने
अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९६३, शके १८२८.

कल्याण–मुंबई.

॥ श्रीः ॥

बृहत्सामुद्रिकशास्त्र ।

(स्त्रीपुरुषलक्षण.)

अयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलक्ष्मीपुरखोरीनिवासि-
ज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्र-
कृतभाषाटीकासहित ।

इसको
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने
अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९६३, शके १८२८.

कल्याण-मुंबई.

भूमिका ।

विदित हो, कि सामुद्रिकशास्त्रभी ज्योतिषशास्त्रका एक मुख्य अंग है, कि जिससे स्त्रियों और पुरुषोंके शुभाशुभ लक्षण भली भांति जाने जा सकते हैं। ज्योतिषशास्त्रमें गणित और फलित नामसे दो भेद हैं, गणितको तो सबही विद्वान् सत्य मानते हैं परन्तु फलितको अनेक विद्वान् सत्य नहीं मानते। हमको तो फलितभी सत्यही प्रतीत होता है, परंतु फलितको कहनेके लिये प्रथम उसके मनन करनेकी परम आवश्यकता है। 'देशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ॥ यः कथयति शुभाशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी॥ १॥' जैसे कि, हम यहां कुछ चिह्न, पुरुष और स्त्रियोंके लिखते हैं, कि जिनकी कई वार परीक्षा हुई है और सचे निकाले।

जिस पुरुषका वर्ण गौर, कृश शरीर और सूक्ष्म देह तथा कलाई और जंघापर बाल बहुत हों, वह अत्यन्त कामी और बहुपुत्र होता है। जिसका देह लंबा, वर्ण गोधूमका, अत्यन्त चतुर और कृश देह हो, वह पुत्रहीन वा स्वल्पसन्तान होता है। जो ह्रस्वग्रीव, सूक्ष्म देह, चंचल स्वभाव हो वह कपटी और छली होता है। काणा, खल्वाट, खंज, तथा बिडालनेत्रका पुरुष पापात्मा, कुटिल, अविश्वासपात्र होता है। जिसके लिंगमें वामांग टेढा हो वह कन्याकी सन्तानवाला, और जिसके दक्षिणांग टेढा हो वह पुत्रसन्ततिमान् होता है। तथा जो लंब देह, स्थूल काय, बहुभाषी और उच्चशब्दवाला हो वह मानी, अहंकारी होता है। मध्यकाय, भारी देह, गौर वर्ण, शीघ्र बोलनेवाला जिसकी जिह्वा बोलनेमें चकटती हो वा भेददन्ती हो, वह अवश्य चतुर विद्वान् तथा गुणी और बहुपुत्र होता है। कृष्णवर्ण, ह्रस्वतनु, कुरूप क्रूरात्मा, अवश्य झूंठा, छली, ठग होता है।

जैसा पुरुषका व्यवहार है वैसाही स्त्रियोंका है, जो स्त्री ह्रस्वकाय, श्यामनयना हो वह व्यभिचारिणी होती है। जिसके चरणकी तर्जनी अंगुष्ठसे लंबी हो वह व्यभिचारिणी तथा विधवा होती है। जिसके हस्त, पाद भारी, अंगुली छोटी, किंचित् स्थूलकाय, मध्यदेह, गौरवर्ण हो वहभी व्यभिचारिणी निर्लज्जा और निर्भया होती है। लंबी तथा कृशदेह, पिंडली और कलाईपर बाल, शीघ्रगामिनी जिसका पांव मध्यसे पृथिवीपर न लगे वहभी व्यभिचारिणी होती है। जिसके स्कंध, कुच, नितम्ब, चलनेमें हिलें तथा शीघ्र और तिरछी वहभी व्यभिचारिणी होती है इत्यादि लक्षणोंसे स्वभाव गुण, अगुण तथा आयु पहिचानी जा सकती है। सामुद्रिकशास्त्रमें मनन करनेसे और परीक्षासे शरीरस्थ लक्षणोंका यथार्थ ज्ञान हो जाता है।



यह सामुद्रिक शास्त्र प्राचीन लिखा हुआ हमको एक पंडितसे प्राप्त हुआ और जैसा कुछ उसमें क्रम था उसी अनुसार हमने लिखकर भाषाटीका कर दिया है यद्यपि उस हस्तलिखित पुस्तकमें अशुद्धियां बहुत थीं तथापि हमने निजमति अनुसार अशुद्धियोंको शुद्ध कर दिया है तोभी लेखदोषसे अथवा मनुष्यधर्मानुसार अशुद्धि रह गई हो उसको विद्वान् जन क्षमा करेंगे यह हमारी वारंवार प्रार्थना है अथवा 'अस्मिन्स्वरव्यंजनाबिन्दुरेफमात्राविहीनं लिखितं मया यत् । तत्सर्वमार्यैः परिशोधनीयं प्रायेण मुह्यन्ति हि ये लिखन्ति ।'

इस ग्रन्थके दो खंड हैं १ पूर्वखंड, २ उत्तरखंड तहां पूर्व खंडमें मनुष्योंके अंग प्रत्यंग तथा हस्तरेखा व चिह्नोंके लक्षण भली भांति वर्णन किये हैं । और उत्तरखंडमें स्त्रियोंके अंग प्रत्यंग तथा हस्तरेखा व चिह्नोंके लक्षण भली भांति लिखे गये हैं ।

 किमाधिकमित्यलम् ।

चैत्रशुक्ल ९ सम्वत् १९६३.

सत्कृपाभाजन-
ज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसाद मिश्र
लखीमपुर खीरी,
(अवध.)

भाषाकारकृत प्रार्थना ।

त्रिषष्टिनन्दचन्द्रेऽब्दे आषाढे च सिते दले ।
चतुर्थ्यां भौमवारे च भाषा सम्पूर्णतामगात् ॥ १ ॥
भाषेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं विबुधैर्नरैः ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीमन्महाराजाविक्रमादित्यजीके सम्वत् १९६३ आषाढमास शुक्लपक्ष चतुर्थी भौमवारको यह (सामुद्रिकशास्त्रकी) भाषाटीका समाप्त हुई, यह भाषा प्रेमपूर्वक ज्योतिर्वित्पण्डित नारायणप्रसादमिश्रने रचना करी यदि यहां कुछभी कहीं अशुद्धता रह गई हो तो विद्वान् जनोंको क्षमा करनी चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

समर्पण ।

अयोध्यामंडले रम्ये नैमिषात्पश्चिमोत्तरे ॥
योजने सप्तप्रमिते तत्र लक्ष्मीपुरे वरे ॥ १ ॥
मिश्रनारायणेनात्र भाषां कृत्वा यथामति ॥
बृहत्सामुद्रिकं शास्त्रं गंगाविष्णोः समर्पितम् ॥ २ ॥

अर्थ—अयोध्यामंडल जो अत्यन्त रमणीय है जिसको अवधदेश कहते हैं उसमें एक प्रसिद्ध नैमिषक्षेत्र है तहांसे पश्चिमोत्तर (वायव्य कोणमें) सात योजन (२८ कोश) पर लखीमपुर नामवाला एक श्रेष्ठ ग्राम है तहां मुझ नारायणप्रसादमिश्रने अपनी बुद्धिके अनुसार भाषाटीका करके यह बृहत्सामुद्रिक (बडा सामुद्रिक) शास्त्र श्रीमान् सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीके अर्थ भाषान्तरसहित समर्पण किया ॥ १ ॥ २ ॥

बृहत्सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.
पूर्वखंड ।	
मङ्गलाचरण	१
ग्रन्थारम्भ	,,
राजचिह्न	२
ऊर्ध्वरेखाफल	३
यवाकारचिह्नफल	,,
लक्ष्मीप्राप्तिचिह्नफल	,,
अखण्डलक्ष्मीचिह्न	,,
उत्तमराजाचिह्न	४
करे वा पादतले चिह्न	,,
मत्स्यरेखाफल	५
तुलादिचिह्न	,,
पद्मादिचिह्न	,,
शंखादिचिह्न	,,
त्रिशूलचिह्न	६
शक्तितोमरादिचिह्न	,,
अंकुशादिचिह्न	७
गिरिकंकणादिचिह्न	,,
सूर्यचन्द्रादिचिह्न	,,
यवाकारचिह्न	८
ऊर्ध्वरेखाफल	९
आयुरेखादिविचार	११
बाल्यमृत्युचिह्न	१२
जारजातलक्षण	,,
मातृपितृरेखाविचार	१३
बहुरेखाफल	१४
ललाटवर्णन	१५
मुखाकृतिवर्णन	१९
ओष्ठवर्णन	२०
दन्तलक्षण	२२
जिह्वालक्षण	२३
तालुलक्षण	२३
नासिकालक्षण	२४
नेत्रलक्षण	,,
भौंहलक्षण	२७
कर्णलक्षण	,,
हनु (ठोंडी) लक्षण	२८
मुच्छलक्षण	,,
कपोललक्षण	२९
पृष्ठलक्षण	,,
ग्रीवालक्षण	३०
ललाटरेखा	३१
स्कन्धलक्षण	३३
बाहुलक्षण	,,
वक्षःस्थललक्षण	३४
स्तनलक्षण	,,
उदरलक्षण	,,
नाभिलक्षण	३६
कुक्षिलक्षण	,,
हस्तलक्षण	,,
अंगुष्ठलक्षण	३७
हस्तांगुलिलक्षण	३८
पुनरंगुष्ठांगुलिलक्षण	,,
कटिलक्षण	३९
गुद व अंडकोशका लक्षण	,,
लिंगलक्षण	४०
वीर्यलक्षण	४२
रुधिरलक्षण	४३
रोमलक्षण	,,
जंघालक्षण	४४
जानुलक्षण	४५
गुदालक्षण	४६

विषय.	पृष्ठांक.
चरणलक्षण	४६
पादांगुलिलक्षण	४७
नखलक्षण	४८
स्त्रीपुरुषसंख्यारेखा	,,
सन्तानरेखा	,,
भ्रातृरेखा	४९
अल्पमृत्युरेखा	,,
शरीरवर्ण	,,
गन्धलक्षण	५०
गतिलक्षण	,,
उत्तरखंड ।	
स्त्रीलक्षण ।	
मस्तकलक्षण	५१
कपालत्रिशूललक्षण	५३
ललाटभगशकटलक्षण	,,
शिरःकेशलक्षण	५४
मशकतिलादिचिह्न	,,
नेत्रचिह्न	५६
नेत्रपक्ष्म (पलक) लक्षण	५८
भृकुटीलक्षण	५९
कर्णलक्षण	,,
दन्तलक्षण	,,
जिह्वालक्षण	६०
तालुलक्षण	,,
घण्टिका (घांटी) लक्षण	६१
वाणीलक्षण	,,
नासिकालक्षण	६२
दन्तशब्द	,,
ओष्ठलक्षण	६३
कपोललक्षण	,,
हनुलक्षण	६४
कंठलक्षण	,,
हस्तरेखालक्षण	६६
अंगुष्ठलक्षण	६८
हस्तांगुलीलक्षण	६९
करतललक्षण	,,
करपृष्ठलक्षण	७०
नखलक्षण	,,
बाहुमूललक्षण	७१
स्कन्धलक्षण	,,
वक्षःस्थललक्षण	७२
स्तनलक्षण	७३
त्रिवलीवलीलक्षण	७४
उदरलक्षण	,,
नाभिलक्षण	७५
नितम्बकटिलक्षण	७६
योनिलक्षण	,,
जंघालक्षण	७९
जानुलक्षण	,,
रोमलक्षण	८०
पार्ष्णिलक्षण	,,
गुल्फलक्षण	,,
चरणलक्षण	८१
पादतललक्षण	,,
गतिलक्षण	८२
पादांगुलिलक्षण	,,
अनामिकामध्यमांगुलिलक्षण	,,
कनिष्ठांगुलिलक्षण	८३
पादनखलक्षण	,,
पदपृष्ठलक्षण	,,
अन्यअशुभलक्षण	,,
हस्तपादनानाचिह्नवर्णन	८६
स्त्रीपुरुषलक्षण	८९
पद्मिनीलक्षण	,,
चित्रिणीलक्षण	,,
शांखिनीलक्षण	९०
हस्तिनीलक्षण	,,

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
कुल्पालक्षण	.... ९१	तरुण स्त्रीकी प्रशंसा	.... ९३
पुरुषलक्षण	.... ,,	चक्रविचार	.... ,,
देवपुरुषलक्षण	.... ,,	शंखविचार	.... ९४
गन्धर्वमनुष्यलक्षण	.... ९२	शीपविचार	.... ,,
यक्षपुरुषलक्षण	.... ,,	कररेखा	.... ,,
राक्षसमनुष्यलक्षण	.... ,,	नखविचार	.... ९५
पिशाचमनुष्यलक्षण	.... ,,	भुजालक्षण	.... ,,
पांच प्रकारकी स्त्रियां	.... ९३	हस्तविचार	.... ९६

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ।



॥ श्रीः ॥

अथ

भाषाटीकासहितं

सामुद्रिकशास्त्रम् ।

मंगलाचरणम् ।

श्रीगणेशं नमस्कृत्य गुरुं च गिरिजापतिम् ॥
नारायणेन रचिता व्याख्या सामुद्रिकस्य हि ॥ १ ॥

अर्थ-श्रीगणेशजीको और गुरुदेव तथा गिरिजापति (महादेवजी) को नमस्कार करके नारायणप्रसादमिश्रने सामुद्रिकग्रन्थकी व्याख्या (भाषाटीका) रचना करी ॥ १ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम् ॥
दक्षिणे पुरुषं ज्ञेयं वामे वामाकरं शुभम् ॥ २ ॥

अर्थ-अब आगे हम हस्तरेखाका विचार वर्णन करेंगे सो सुनो । दाहिने हाथमें पुरुषके लक्षण देखना और बायें हाथको देखकर स्त्रीके लक्षण कहना, हाथकी रेखाओंसे सम्पूर्ण शुभाशुभ फल कथन करना ॥ २ ॥

शिवोक्तं तंत्रसामुद्रं कररेखाशुभाशुभम् ॥
यस्य विज्ञानमात्रेण पुरुषो नहि शोचति ॥ ३ ॥

अर्थ-श्रीशिव (महादेवजी) के कहे हुए सामुद्रिकशास्त्रमें हाथकी रेखासे शुभाशुभकी व्यवस्था लिखी है, जिस शुभाशुभ अर्थात् सुखदुःखके भलीभांति जाननेमात्रसे मनुष्य शोकको प्राप्त नहीं होता अर्थात् सुखी रहता है ॥ ३ ॥

राजचिह्न ।

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ॥
करे वा चरणोऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ ४ ॥

अर्थ-जिसके जन्मसमय प्रबल राजयोग होवे उसके हाथ वा पांवमें पद्म आदि राजचिह्न अवश्य होता है ॥ ४ ॥

अनामा मूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ॥
मध्यमांगुलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता ॥ ५ ॥

अर्थ-अनामा (कनिष्ठिका और मध्यमाके बीचकी अंगुली) के मूलमें जो सीधी रेखा होवे तो वह पुण्यकी देनेवाली शुभ होती है और बीचकी अंगुलीसे लेके मणिबन्ध अर्थात् हाथकी जडतक जो सीधी और पूर्ण एकही रेखा होवे तोभी शुभ होती है ॥ ५ ॥

वैसारणो वातपवारणो वा चोद्धारणो दक्षिणपाणिमध्ये ॥ सरोवरं चांकुश एव यस्य वीणा च राजा भुवि जायते सः ॥ ६ ॥

अर्थ-जिसके दाहिने हाथमें मछली, छत्र, हाथी, तालाव और अंकुश वा वीणा इनमेंसे जो कोईभी चिह्न होवे तो वह मनुष्य पृथ्वीमें राजा होवे ॥ ६ ॥

मुशलशैलकृपाणहलाङ्कितं करतलं किल यस्य स वित्तपः ॥ कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेव नृपालभुवो यदा ॥ ७ ॥

अर्थ-जिसका हाथ मुशल, पर्वत, तलवार, हल इन चिह्नोंसे युक्त हो वह अवश्य धनवान् होवे और जो फूलकी मालाका चिह्न होवे तोभी धनवान् होवे तथा राजकुलमें उत्पन्न हो और यह चिह्न हो तो राजा होवे ॥ ७ ॥

ऊर्द्ध्वरेखाफल ।

सोर्द्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ॥
खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥ ८ ॥

अर्थ-ऊर्ध्वरेखा वह है जो बीचकी अंगुलीसे हाथकी जडतक अपूर्ण एकही रेखा होती है, सो विशेषकरके राज्यलाभ करानेवाली होती है, जो ऊर्ध्व रेखा खंडित हो तो दुष्ट फल देती है और जो क्षीण हो तो क्षीण फल देती है ॥ ८ ॥

यवाकारचिह्नफल ।

अंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारुयवो यशस्वी ॥ स्ववंशभूषासहितो विभूषा योषाजनैरर्थगणैश्च मर्त्यः ॥ ९ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके अंगूठेके बीच जौके समान सुन्दर आकार होवे तो वह यशवाला होता है और वह मनुष्य अपने वंशमें भूषण तथा आभूषण और स्त्रीजन तथा धनसे युक्त होता है ॥ ९ ॥

लक्ष्मीप्राप्तिचिह्न ।

करतलेऽपि च पादतले नृणां तुरगपंकजचापरथाङ्गवत् ॥ ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमा परमालये ॥ १० ॥

अर्थ-जिसके हथेली और चरणतल (तलवों) में घोडा, कमल, मनुष्य, चक्र, ध्वजा, रथ, सिंहासन और डोली ये चिह्न हों उनके स्थानमें श्रेष्ठ लक्ष्मी सर्वदा निवास करे ॥ १० ॥

अखण्डलक्ष्मीचिह्न ।

कुम्भः स्तम्भो वा तुरङ्गो मृदङ्गः पाणावंघ्रौ वा द्रुमो यस्य पुंसः ॥ चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्या परीतः किंवा सोऽयं पण्डितः शौण्डिको वा ॥ ११ ॥

अर्थ-जिसके हथेली वा चरणके तलवेपर कलश, खंभ, घोडा, वृक्ष, लाठी ये चिह्न हों वह अखंड लक्ष्मीसे युक्त होवे अथवा पंडित वा शौण्डिक (मदिरा वेचनेवाला) होवे ॥ ११ ॥

उत्तमराजचिह्न ।

विशालभालोऽम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षिति-
मण्डलेशः ॥ आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणी-
भृतां मुख्यतरं महान्तः ॥ १२ ॥

अर्थ-जिसका माथा बडा हो और कमलपत्रके समान नेत्र हों तथा सुन्दर गोल शिर हो तो वह मनुष्य भूमंडलका स्वामी होवे और खडे होनेपर जिसका हाथ घुटनोंतक होवे वह राजश्रेष्ठ और महाराजा होवे ॥ १२ ॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा वक्षःस्थलं रत्नशि-
लातलाभम् ॥ आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ मृदू
भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥ १३ ॥

अर्थ-जिसकी नाभि गहिरी हो और नाक सीधी, छाती रत्न-शिलाके समान निर्मल और चरण लाल रंगके कोमल होवें तो वह श्रेष्ठ राजा होता है ॥ १३ ॥

करे वा पादतले चिह्न ।

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ॥
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ १४ ॥

अर्थ-जिसके हथेलीमें तिलका चिह्न हो तो वह उसको अतुल धन प्रदान करे है, एवं चरणतलमें तिल तो सवारी व धनका सुख देवे है ॥ १४ ॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ॥
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥१५॥

अर्थ-राजाके वंशमें उत्पन्न मनुष्योंको ये सब पूर्वोक्त चिह्न पूर्णरूपसे राज्यसुखको देते हैं, अन्य मनुष्योंको थोडाही धन व प्रतिष्ठा आदि फल देते हैं ॥ १५ ॥

मत्स्यरेखाफल ।

यस्य हस्ते मत्स्यरेखा कर्मसिद्धिश्च जायते ॥
धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥ १६ ॥

अर्थ-जिसके हथेलीमें मत्स्य (मछली) की रेखा होवे तो वह मनुष्य कर्मसिद्धिवाला होवे अर्थात् वह मनुष्य जो जो व्यापारादि कर्म करे वह वह सिद्ध होवे उसमें धनधान्यादिकी प्राप्ति होवे तथा वह मनुष्य धनवान् बहुपुत्रवान् होवे इसमें सन्देह नहीं करना ॥१६॥

तुलादिचिह्न ।

तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते ॥
तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात्पुरुषस्य न संशयः॥१७॥

अर्थ-जिसके हाथके बीच तुला (तराजू), गांव अर्थात् नगरके समान चौकोन रेखाके बीच चित्र विचित्र चिह्न प्रतीत होवे तथा वज्रका चिह्न दीख पडे तो उस पुरुपको निःसन्देह वाणिज्य (व्यापार) की सिद्धि होती है अर्थात् वह व्यापार द्वारा धनवान् होवे ॥ १७ ॥

पद्मादिचिह्न ।

पद्मचापादिखड्गं च अष्टकोणादि दृश्यते ॥
स्त्रियश्च पुरुषस्यापि धनवान्स सुखी नरः ॥ १८ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें कमल, धनुप, तलवार, अठकोन आदि

चिह्न दीख पडे तो वह स्त्री हो अथवा पुरुष सो धनवान् और सुखी होवे तथा कमलके चिह्नसे पुरुष राजा और स्त्री रानी होती है, धनुपके चिह्नसे पुरुष धनुर्धारी होता है, तलवारका चिह्न होनेसे पुरुष महावीर संग्रामकर्ता होता है, आठकोनका चिह्न होनेसे राजकुलमें उत्पन्न होनेसे राजा अथवा भूमिपति होता है ॥ १८ ॥

शंखादिचिह्न ।

शंखचक्रध्वजाकारो नासाकारश्च दृश्यते ॥
सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिवान्स भवेन्नरः ॥ १९ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें शंख, चक्र, ध्वजा इनके आकारवाला चिह्न हो और नासिकाके आकारवाला चिह्न दीख पडे तो सम्पूर्ण विद्याका पढानेवाला, बुद्धिवान् मनुष्य होवे तथा यदि शंखका चिह्न होवे तो वेदवेदांतका ज्ञाता हो, नासिकाके आकारवाला चिह्न हो तो सांसारिक व्यापारविद्यामें निपुण होवे ॥ १९ ॥

त्रिशूलचिह्न ।

त्रिशूले करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्तते ॥
यज्ञे कर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजने ॥ २० ॥

अर्थ-जिसके हाथके बीच त्रिशूलका चिह्न हो तो राजा होनेका लक्षण जानना अर्थात् पुरुष वा स्त्रीके हाथके बीच शुद्ध त्रिशूल प्रगट हो तो अवश्य राजा होवे है, त्रिशूलमें यदि सन्देह हो अर्थात् शुद्ध प्रगट न होवे तो राजाके आश्रय होके राजसुख भोगे तथा राजा वा राजाका कर्मचारी होकर नाना प्रकारके यज्ञ करे, दान करे, देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करे ॥ २० ॥

शक्तितोमरादिचिह्न ।

शक्तितोमरबाणैश्च करमध्ये सुदृश्यते ॥
रथचक्रध्वजाकारो शक्रराज्ये लभेन्नरः ॥ २१ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें शक्ति बरछीका चिह्न हो अथवा तोमर खड्गके सदृश कुछ विलक्षण मुष्टीमें हलप्रवेशका योग हो, तोमर नाम खड्गाकार प्रतीत हो वा बाणका चिह्न हाथके बीचमें प्रगट दीख पडे तो ये तीनों चिह्न होनेसे श्रेष्ठ राज्यको मनुष्य प्राप्त होवे, इनमेंसे यदि एकभी चिह्न होवे तो सामान्य राज्यको प्राप्त होवे, दो चिह्नसे राज्य ऐश्वर्य भोग करे; रथ, चक्र, ध्वजा इनके आकार चिह्न प्रगट दीख पडे तो इन्द्रसमान राज्य प्राप्त होवे ॥ २१ ॥

अंकुशचिह्न ।

अंकुशं कुण्डलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥
यस्य राज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनं यथा ॥ २२ ॥

अर्थ-जिसके हथेलीमें अंकुश, कुंडल, चक्र ये तीनों चिह्न प्रगट प्रतीत हों तो मनुष्य चक्रवर्ती राजा होवे, यदि एक चिह्न हो तो सामान्य राज्य भोगे, दो चिह्न हों तो कुछ विशेष राज्यका ऐश्वर्य भोगे यह क्षीरसमुद्रवासी नारायणका वचन है ॥ २२ ॥

गिरिकंकणादिचिह्न ।

गिरिकंकणयोनीनां नरमुंडघटादिकम् ॥
करे वै यस्य चिह्नानि राजमंत्री भवेन्नरः ॥ २३ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें गिरि (पर्वत), कंकण, योनि, नरमुंड (कपाल), घट (घडा) इनका प्रगट चिह्न होवे तो वह मनुष्य राजमंत्री होवे, तीनों चिह्न होनेसे राजमंत्री अवश्य होवे और जो इनमेंसे जो पांचों चिह्न हों तो महामंत्री होवे, दो अथवा एक चिह्न हो तो राजमंत्रीके समान ऐश्वर्यवाला होवे ॥ २३ ॥

सूर्यचन्द्रादिचिह्न ।

सूर्यचन्द्रलतानेत्र अष्टकोणत्रिकोणकम् ॥
मन्दिरं गज अश्वानां चिह्नं धनिसुखी भवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें सूर्य, चन्द्रमा, लता (वेलि), नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, मन्दिर, हाथी, घोडा इनमेंसे एक चिह्नभी होवे तो मनुष्य धनी सुखी होवे, सूर्यका चिह्न हो तो मनुष्य तेजवान् होवे, चन्द्रमाका चिह्न होवे तो उसका नामप्रकाश होवे, वेलिका चिह्न हो तो उसका यश जगत्में फैले, आठ कोने, तीन कोने और मन्दिरका चिह्न हो तो वह मनुष्य कूप, बावडी, तालाव, देवालय, मन्दिर बनवानेवाला होवे, हाथीका चिह्न होवे तो उसके द्वारपर हाथी बंधे रहें, अश्व (घोडे) का चिह्न हो तो उसके द्वारपर घोडे बंधे रहें॥२४॥

यवाकारचिह्न ।

अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते ॥
उत्पन्नो भुवि भोगी स्यात्स नरः सुखमेधते ॥ २५ ॥

अर्थ-जिसके हाथके अंगूठेके मध्यमें जौका चिह्न प्रगट दीख पडे तो वह मनुष्य जन्मसे मरणपर्यन्त पृथ्वीपर सुखी भोगी होवे॥२५॥

तथा च ।

मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य च दृश्यते ॥
धनवान्सुखभोगी स्यात्पुत्रदारगृहादिषु ॥ २६ ॥

अर्थ-जिसके मध्यमा (बीचकी अंगुली) अथवा तर्जनी (अंगूठेके पासकी अंगुली) के मूलमें जौका आकार प्रगट दीख पडे तो वह मनुष्य धनी, गुणी, माननीय तथा सुखी होकर लोकमें प्रसिद्ध होवे और प्रसन्न होवे, पुत्र, स्त्री, घर आदिसे सुख भोग प्राप्त होवे ॥२६॥

तथा च ।

अनामिकापूर्वमूले कनिष्ठादिक्रमेण तत् ॥
आयुष्यं दश वर्षाणि सामुद्रवचनं यथा ॥ २७ ॥

अर्थ-यदि किसीके हाथके बीचमें अनामिका (छोटी अंगुलीके पासकी अंगुली) और कनिष्ठा (छोटी अंगुली) के पूर्व मूलमें

जौके आकारवाला चिह्न प्रत्यक्ष दीख पडे तो दश वर्षकी आयुका लक्षण जानना, क्षीरसमुद्रशायी भगवान्का ऐसा वचन है। भावार्थ यह कि यदि कनिष्ठा (छोटी) अंगुलीके प्रथम पूर्वभागसे लेके अनामिका अंगुलीके पूर्वभाग मूलतक आयुरेखा होनेसे दश वर्षपर्यन्त जीवनका लक्षण आयुरेखामें प्रतीत होवे। यदि रेखाके बीचमें कई रेखा टूट गई होंय, नीचेकी ओर झुकी हों तो जलमें डूबनेका ज्ञान होवे, यदि आयुरेखाके ऊपरसे चढके नीचे झुकी हों तो वृक्ष वा कोठेपरसे गिरे, कनिष्ठासे तर्जनीतक अपूर्ण रेखा हो तो १२० वर्षकी आयु होवे ॥ २७ ॥

ऊर्ध्वरेखाफल ।

अंगुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्तते नृपतेः शुभम् ॥
सेनापतिर्धनाढ्यश्च मध्यमायुर्नरो भवेत् ॥ २८ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके अंगूठेके ऊपर चढके ऊर्ध्वगामी रेखा दीख पडे तो जानिये वह मनुष्य बडा उत्तम राजराजेश्वर होवे और बहुतसी सेनाका स्वामी, तथा धनवान् होवे और मध्यम आयु अर्थात् पचास साठ वर्ष जीवन रखकर वह मनुष्य सम्पूर्ण भोग करके उत्तम तीर्थमें शरीर त्याग करे ॥ २८ ॥

तथा च ।

तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥
राजदूतो भवेत्तस्य धर्मनाशः प्रजायते ॥ २९ ॥

अर्थ-एवं तर्जनी (अंगूठेके पासकी अंगुली) के मूलपर्यन्त यदि ऊर्ध्व (खडी) रेखा मिलकर प्रगट होय तो राजदूत होनेका चिह्न है। सिपाही हो खड्गधारणपूर्वक नाना प्रकारकी सुधि (खबर) ले आनेका अधिकार प्राप्त होवे और उसके धर्मका क्षय होवे

अर्थात् जीवनपर्यन्त राजकीय कर्म करनेमें चंचल होके स्वस्थ नहीं होनेसे अपने वर्णाश्रमके यावत् उचित धर्मकर्मकी चेष्टासे रहित होके संसारमें यत्किञ्चित् विषयभोग करके देह छोड देवे ॥ २९ ॥

मध्यमामूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान्स सुखी नरः ॥ ३० ॥

अर्थ-जिसके हाथकी बीचकी अंगुली जडतक ऊर्ध्व रेखाका चिह्न दीख पडे और प्रत्यक्ष प्रतीत हो तो वह प्राणी अपने वंशमें बडा भाग्यवान्, पुत्रपौत्रादिसम्पन्न, धनवान् और सुखी होवे अर्थात् लोकमें बडे आनन्दसे भोग विलास करके जीवनपर्यन्त आनन्दसे रहे ॥ ३० ॥

अनामिकामूर्ध्वरेखा व्यवसायधनागमः ॥
सुखदुःखेन जीवेन पुत्रपौत्रगृहादिषु ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिसके अनामिका (छोटी अंगुलीके समीपकी अंगुली) के मूलपर्यंत ऊर्ध्व रेखा प्रतीत होवे तो व्यवसाय (व्यापार) अर्थात् नाना प्रकारके उद्यम करके धनका आगम होवे और पुत्रपौत्रसे युक्त होके घरमें कुछ सुख और दुःखको प्राप्त होता हुआ मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करे ॥ ३१ ॥

यस्य पाण्यूर्ध्वरेखा स्यात्कनिष्ठामूलसंस्थिता ॥
ते नराः परदेशेषु शतमायुर्लभन्ति वै ॥ ३२ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें कनिष्ठा (छोटी) अंगुलीकी जडमें ऊर्ध्व (खडी) रेखा प्रगट दीख पडे तो ऐसी रेखावाले मनुष्य सौ वर्षपर्यन्त अपना जीवन व्यतीत करते हुए संसारमें निर्वाह करें ॥ ३२ ॥

तथा च ।

दीक्षादानं यथा धर्मपदवी सुखमेव च ॥
विद्यामानापमानौ च अंगुल्या मूलसंस्थिता ॥ ३३ ॥

अर्थ-कनिष्ठा अंगुलीके मूलमें यदि रेखायें हों तो दीक्षा दान आदि फलको देवे, एक रेखा हो तो दाता और परोपकारी होवे, दो रेखा हों तो यथावत् धर्मशील, माननीय, पूजनीय, ज्ञानवान् होवे, तीन रेखा हों तो महा ऐश्वर्य, राजभोग, सुखसम्पत्ति प्राप्त होवे, चार रेखा हों तो बडा विद्यावान्, पंडित, ज्ञानी व बुद्धिवान् होवे पांच रेखा हों तो लोकमें माननीय और प्रतिष्ठावान् होवे, छः रेखा हो तो सुख प्राप्त होवे, सात रेखा हों तो संसारमें सामान्य सुखी मानी होवे ॥ ३३ ॥

कनिष्ठामूलसंयुक्ता त्रिरेखा यस्य दृश्यते ॥
एकं युग्मं तृतीयं च चतुर्थं बाणसंयुतम् ॥ ३४ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें कनिष्ठा (छोटी) अंगुलीके मूलमें यदि तीन रेखायें प्रगट दीख पडें तो संसारके बीच धर्म, अर्थ, काम ये तीन पदार्थ भोग करनेका चिह्न जानना, यदि एक रेखा हो तो धनी हो, दो रेखा हों तो धर्मात्मा हो, तीन रेखा हों तो भोगी होवे, चार रेखा हों तो बहुत स्त्रियोंसे भोग करनेवाला होवे, पांच रेखा हों तो ज्ञानी, माननीय, यशस्वी और बुद्धिवान् होवे, कनिष्ठा अंगुलीके मूलतले जितनी रेखायें हों उतनी स्त्रियोंसे भोग विलास करनेमें आवे, एवं यदि स्त्रीकी कनिष्ठा अंगुलीके नीच मूल तले जितनी रेखायें ऊपर चढकर प्रतीत होवें उतनेही पुरुषोंके साथ उस स्त्रीका संयोग होवे ॥ ३४ ॥

आयुरेखाविचार ।

आयुर्बले भवेद्रेखा तर्जनीमूलसंस्थिता ॥
शतवर्षं भवेदायुः सुखमृत्युर्न संशयः ॥ ३५ ॥

अर्थ-कनिष्ठाके मूलतले जो रेखायें प्रगट प्रतीत होवें तो उन रेखाओंके चिह्नसे सुख, दुःख, जन्म, मरण और आयुका परिज्ञान

होवे है, यदि कनिष्ठाके मूलसे चलके तर्जनी अंगुलीके बीच मूलसे मिलकर प्रतीत होनेमें एक सौ वर्षकी आयु होवे और वह प्राणी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करे, यदि मध्यमाके मूलतक आयुरेखा रहे तो पचहत्तर वर्षकी आयु होवे ॥ ३५ ॥

मध्यमामूलपर्यन्तमायूरेखा च दृश्यते ॥
चतुर्दशचतुर्विंशदायुर्बलविनाशनम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-यदि आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीकी मूलसे लेके मध्यमा अंगुलीके मूलपर्यन्त दीख पडे तो चौदह और चौबीस मिलाकर अडतीस वर्षकी आयुमें उसका मरण होवे ऐसा कहना ॥ ३६ ॥

आयुर्बलं भवेद्रेखाऽनामिकामूलसंस्थिता ॥
त्रिदशं च त्रिषष्टिश्च आयुर्बलविनाशनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-यदि आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीकी मूलसे लेके अनामिका अंगुलीके मूलपर्यन्त स्थित होवे तो तेरह वर्षकी आयु जानना, यदि दो जो मात्र दीख पडे तो त्रेसठ वर्षकी आयु जानना ॥३७॥

बाल्यमृत्युचिह्न ।

आयुर्हीनं यथा स्वल्पं लघु दीर्घं च दृश्यते ॥
ते नराः सुखदुःखेन बाल्यमृत्युर्न संशयः ॥ ३८ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें आयुकी रेखा क्षीण अल्प और छोटी बडी तथा कटी हुई दीख पडे तो अल्पायु जानना, जिनके ऐसी रेखा प्रतीत हो वे मनुष्य सुख और दुःखसे युक्त होके बाल्यावस्थामें निःसन्देह मृत्युको प्राप्त होवें ॥ ३८ ॥

जारजातलक्षण ।

करमध्ये स्थिता रेखा पितुर्वंशसमुद्भवः ॥
पूर्णरेखा पितुर्वंशोऽर्धरेखा परवंशकः ॥ ३९ ॥

अर्थ-हाथके बीचमें जो दो रेखायें प्रायः होती हैं उनके लक्षणको कहते हैं। अंगूठा और तर्जनी अंगुलीके बीचसे चलकर दो रेखा होती हैं उनमें एक तो हाथके बीचसे पीछे पहुंचेकी ओरसे घूमती हुई जाती है, दूसरी रेखा कनिष्ठा (छोटी) के सामने (मूल) से आयुरेखामें मिलती हुई नीचेकी ओर चलकर स्थित होवे और पूर्ण होवे तो जानिये कि यह अपने पितासे उत्पन्न हुआ है, यदि इस रेखामें अपूर्णता न हो तो किसी दूसरेसे उनकी उत्पत्ति जानना । तथा यदि अंगूठा और तर्जनीके बीच दो रेखा मिलके रहें तो जानिये कि मातापितामें बडा प्रेम था । यदि पृथक् रेखा प्रतीत हो तो जानना कि दोनोंमें प्रीति नहीं रहती, कलह व अनबन रहती है । यदि पिताकी रेखा छोटी नीचेकी ओर झुकके चली हो तो पिताकी अल्पायु जानना । यदि रेखा मोटी लाल चिह्न ऊपर हाथके प्रतीत हो तो बडी आयु पिताकी जानना । यदि मातृरेखा जो पहुँचेकी ओरसे होके ऊपरमें गई हो सो श्यामतासे युक्त हो तो माताकी अल्पायु जानना । यदि वही रेखा लाल रंगकी हो और मोटी व पूर्ण हो तो माताकी बडी आयु जानना । यदि माता पिताके दो रेखाके बीच ऊपरके भागमें त्रिशूल हो तो माता पिता स्वर्गवासी देवता होके देवलोकमें जावें ॥ ३९ ॥

मातृपितृरेखाविचार ।

मातृरेखा करे चैव एकैकं युग्ममेव च ॥
एकैकं युग्ममादाय युग्मरेखा च दृश्यते ॥ ४० ॥

अर्थ-दो रेखा माता और पिताकी हाथके बीचमें पृथक् पृथक् होती हैं । माताकी रेखा तर्जनी और अंगूठेके बीचसे चलकर पहुँचेमें मिलके रहती है और पिताकी रेखा तर्जनी और अंगूठेके बीचसे

निकलकर आयुरेखाके नीचेसे चलकर हाथके वामपार्श्व (बाईं ओर) प्रतीत होती है ॥ ४० ॥

बहुरेखाफल ।

बहुरेखा भवेत् क्लेशं स्वल्पनिर्धनहीनता ॥
रेखायां वामनः सौख्यं सामुद्रवचनं यथा ॥ ४१ ॥

अर्थ–जिसके हाथमें माता पिताकी रेखाके बीचमें बहुतसी छोटी छोटी रेखायें प्रतीत हों तो निर्धन होनेका चिह्न जानना तथा क्लेश होवे ऐसा जानना । तथा जो माता पिताकी रेखाके बीच थोडी रेखायें हों तो कुछ निर्धन होके कुछ सुखको भोगनेवाला जानना । यह क्षीरसागरवासी भगवान्‌ने श्रीब्रह्माजीसे वर्णन किया है ॥ ४१ ॥

अङ्गुलीनां पृथग्रेखा गण्यन्ते त्रितयं पृथक् ॥
रेखाद्वादशकं सौख्यं धनधान्यप्रदायकम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके हाथकी पांचों अंगुलियोंकि मध्य पृथक् पृथक् तीन तीन रेखा होनेसे यदि बारह रेखातक प्रत्यक्ष दीख पडें तो वह पुरुष सुखपूर्वक धनधान्य आदिकका भोगनेवाला होता है ऐसा जानना ॥ ४२ ॥

अङ्गुलीनां पृथग्रेखा गणने चेत् त्रयोदशम् ॥
महादुःखं महाक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ॥ ४३ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके हाथमें पांचों अंगुलियोंकी सम्पूर्ण रेखायें गिननेपर तेरह होवें तो वह महादुःखी अनेक प्रकारके क्लेशोंसे युक्त होता है ऐसा समुद्रशायी भगवान्‌ने कथन किया है ॥ ४३ ॥

रेखापंचदशे चौरः षोडशे द्यूतवंचकः ॥
पापी सप्तदशे ज्ञेयो धर्मात्माष्टादशे भवेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ–तथा जिसके हाथकी पांचों अंगुलियोंकी सब रेखायें मिलकर यदि पन्द्रह होवें तो वह मनुष्य बडा भारी चोर होवे ऐसा चिह्न जानना। यदि सोलह रेखायें गिननेसे प्रतीत होवें तो वह द्यूतकर्म करनेवाला अर्थात् जुंवारी होवे तथा वंचक (ठग) होवे । एवं यदि सत्रह रेखायें हों तो मनुष्य पापकर्ममें रत रहे । यदि अठारह रेखायें होवें तो धर्मात्मा होवे ॥ ४४ ॥

ऊनविंशे भवेन्मान्यो गुणज्ञो लोकपूजितः ॥
तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो महात्मा चैकविंशके ॥ ४५ ॥

अर्थ–जिसके दाहिने हाथके पांचों अंगुलियोंमें उन्नीस रेखायें प्रगट दीख पडें तो वह मनुष्य लोकमान्य (संसारमें सन्मान पानेवाला), गुणज्ञ, लोकपूजित होवे और यदि वीस रेखायें प्रत्यक्ष दीख पडें तो तपस्वी तथा यदि इकईस रेखायें प्रगट दीख पडें तो वह मनुष्य महात्मा होवे ॥ ४५ ॥

ललाटवर्णन ।

उत्पन्नैर्विपुलैः शंखैर्ललाटो विषमस्तथा ॥
निर्धनो धनवन्तश्च अर्द्धेन्दुसदृशैर्नरः ॥ ४६ ॥

अर्थ–जिसका ललाट ऊंचा हो और ललाटके ऊपर चढके प्रगट शंखके आकार चिह्न प्रतीत हो तथा ललाटके ऊपर अर्धचन्द्रमाके समान रेखा प्रतीत हो तो निर्धन वंशमें उत्पन्न होनेपरभी मनुष्य बडा धनवान्, सुखी तथा भोगी होवे ॥ ४६ ॥

तथा च ।

विपुलमूर्ध्वमधिकमुन्नतमर्द्धेन्दुसम्मितं राज्यम् ॥
प्रदिशत्याचार्यपदं शुक्तिविशालं नृणां भालम् ॥ ४७ ॥

अर्थ–जिसका ललाट चौडा, ऊंचा, बडा, आधे चन्द्रमाके आ-

कार होवे तो राज्यप्रद होता है और सीपीके समान वडा और चमकीला ललाट होय तो आचार्यपदको देनेवाला जानना ॥ ४७ ॥

भालस्थलस्थिताभिः सुशिराभिरधमाः सदैव पापकराः ॥ अभ्युन्नताभिराढ्यास्ताभिरपि स्वस्तिकाकृतिभिः ॥ ४८ ॥

अर्थ-जिसके मस्तकपर नसोंवाली रेखायें स्थित हों वह पुरुष अधम और पापकर्म करनेवाला होता है तथा जिसके मस्तकमें नसें ऊंची रेखाओंवाली होवें और स्वस्तिक (साथियों) के सदृश हों तो वह पुरुष धनाढ्य होता है ॥ ४८ ॥

स्वल्पैर्धर्मप्रवणा धनहीनाः संवृतैस्तथा विषमैः ॥
निम्नैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणः ॥ ४९ ॥

अर्थ-छोटे लिलारवाले पुरुष धर्मिष्ठ होते हैं और ढके, औंधे व ऊंचे नीचे लिलारवाले निर्धनी होते हैं । नीचे लिलारवाले बन्धन और वध पानेवाले तथा खोटे काम करनेवाले होते हैं ॥ ४९ ॥

ललाटोपसृतास्तिस्रो रेखास्तु शतवर्षिणाम् ॥
वृपत्वस्याच्च शतभरायुः पंचनवत्यथ ॥ ५० ॥

अर्थ-जिसके ललाटके ऊपर तीन रेखायें प्रगट दीख पडें तो सौ वर्षकी आयु जानना । यदि ललाटके ऊपर चार रेखायें प्रगट दीख पडें तो पचानवें वर्षकी आयु जानना ॥ ५० ॥

अरेखेणायुर्नवतिर्विच्छिन्नाभिश्च पुंश्चला ॥
केशांतोपगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ॥ ५१ ॥

अर्थ-जिसके ललाटके ऊपर एक रेखाभी नहीं होय तो नव्वे वर्षकी आयु होय । यदि ललाटके उत्तर बहुत रेखायें छिन्न भिन्न प्रतीत हों तो वह मनुष्य व्यभिचार करनेमें तत्पर रहनेवाला होता है,

तथा यदि एक रेखा ललाटके ऊपर बालोंके मूलमें प्रगट दीख पडे तो अस्सी वर्षकी आयु उसकी होवे ॥ ५१ ॥

पंचभिः पंचभिः षड्भिः पंचाशद्व बहुभिस्तथा ॥
चत्वारिंशच्च चक्राभिस्त्रिंशद्भिर्लग्नगामिभिः ॥ ५२ ॥

अर्थ-जिसके ललाटपर पांच पांच (दश) रेखा अथवा पांच छः (ग्यारह) रेखा वा पंचाशद् (पचास) यद्वा बहुत रेखायें प्रगट प्रतीत होवें तो चालीस वर्षकी आयु होती है तथा ललाटके ऊपर टेढी होकर एक रेखा भ्रुकुटीके ऊपर प्रतीत होय तो तीस वर्षकी आयु निश्चय जानना ॥ ५२ ॥

विंशतिर्वामवक्राभिरायुः क्षुद्राभिरक्षकम् ॥
वामार्द्धप्रथुबालेन्दुभे भ्रुवौ वा ललाटके ॥ ५३ ॥

अर्थ-जिसके ललाटकी रेखा वामभागमें विशेष हों वा टेढी छोटी छोटी होंय तो वीस वर्षकी आयु जानना तथा भ्रुकुटीके ऊपरकी मध्यरेखा माथेपै होके चन्द्रमाकी सदृश रेखा प्रतीत हो तो परिपूर्ण आयु एक सौ वीस वर्षकी जानना अथवा भ्रुकुटीके ऊपर रेखा नहीं होय, द्वितीयाके चन्द्रमाके समान और मोटी रेखाभी नहीं होय, अति सूक्ष्म होय तो अति अल्प (बहुत थोडी) आयु जानना ॥ ५३ ॥

शुभमर्द्धेन्दुसंस्थानमतुंगः स्यादलोमशम् ॥
नृपतीनां भवेच्चिह्नं ललाटे शुभदर्शनम् ॥ ५४ ॥

अर्थ-जिसके ललाटमें भ्रुकुटीके ऊपर एक रेखा प्रगट दीख पडे तथा भ्रुकुटीके बीच रोममिश्रित रेखा दीख पड तो राजा होनेका चिह्न और ऐश्वर्य भोगके चिह्न जानना ॥ ५४ ॥

जीवति वर्षाण्यशीतिः केशान्तोपगते रेखे ॥
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ॥ ५५ ॥

अर्थ-जिसके केशोंके अंततक दो रेखा होवें तो अस्सी वर्षकी आयुतक उसका जीवन होवे। जो अनेक रेखाओंकरके युक्त ललाट होवे तो यह पुरुष नब्बे वर्षपर्यन्त जीवन धारण करे ॥ ५५ ॥

विषमो धनहीनानां करोटिकामश्चिरायुषो मूर्द्धा ॥
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातृपितृघ्नानाम् ॥५६॥

अर्थ-विषम (ऊंचा नीचा) मस्तक धनहीन पुरुषोंका होता है और बहुत आयुवालेका मस्तक खोपडीके आकारवाला होता है। बहुतही लम्बा मस्तक दुःख पानेवाले पुरुषोंका होता है तथा माता पिताका मारनेवाला पुरुष जो होता है उसका मस्तक चिपटासा होता है ॥ ५६ ॥

अंगं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम् ॥
पुरुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ॥ ५७ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंका अथवा स्त्रियोंका जो अंग मांसहीन (पतला), खरदरा, चमकती हुई नसोंवाला होवे तो शुभ नहीं जानना ॥ ५७ ॥

आयुःपरीक्षा पूर्वं नृणां लक्षणं तदा ज्ञेयम् ॥
व्यर्थं लक्षणज्ञानं लोके क्षीणायुषां यस्मात् ॥ ५८ ॥

अर्थ-पहले मनुष्योंकी आयुका निश्चय कर लेवे तब हाथकी रेखाके ज्ञानसे लक्षण जाने। जिन मनुष्योंकी आयु क्षीण हो उनके लक्षणोंका जानना व्यर्थ है अर्थात् बहुत कमती आयुवाले पुरुषोंका लक्षण झूठभी हो जाता है ॥ ५८ ॥

भाग्यवतां पंचांगुलिशिरः सुसौख्याय दक्षिणावर्तः ॥
प्रायः पुंसां वामावर्तो दुःखाय पुनरेषः ॥ ५९ ॥

अर्थ-धनी मनुष्योंके शिरमें पांच अंगुलप्रमाण दाहिनी ओरको झुकी हुई भौंरी होवे तो सुख देनेवाली जाननी और वही भौंरी जो बाई ओरको झुकी हुई होवे तो दुःख देनेवाली जानना ॥ ५९ ॥

मुखाकृतिवर्णन ।

जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य ॥
प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ॥ ६० ॥

अर्थ-जिसका मुखारविन्द माताके मुखके समान हो वह मनुष्य प्रायः धन्य (सुखी, भोगी और यशस्वी) होता है ऐसा समुद्रने वर्णन किया है ॥ ६० ॥

समवृत्तमवलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभिवदनम् ॥
सिंहेभनिभं राज्यं सम्पूर्णं भोगिनां चेति ॥ ६१ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यका मुख सब ओरसे गोल, भयानक, बडा, चिकना और दर्शनीय अर्थात् देखने योग्य, समान, सुगन्धित, सिंह और हाथीके तुल्य होय वह राज्य करनेवाला होता है तथा सब प्रकारके ऐश्वर्य भोगियोंका ऐसाही मुख होता है ॥ ६१ ॥

भीरुमुखं पापानां निम्नं कुटिलं च पुत्रहीनानाम् ॥
दीर्घं निर्द्रव्याणां भाग्यवतां मंडलं ज्ञेयम् ॥ ६२ ॥

अर्थ-पापी पुरुषोंका मुख डरावना होता है। पुत्रहीन पुरुषोंका मुख नीचा और कुटिल (टेढा) होता है। तथा निर्धन जनोंका मुख लम्बा होता है। भाग्यवान् मनुष्योंका मुख गोल होता है ॥ ६२ ॥

दौर्भाग्यवतां पृथुलं पुंसां स्त्रीमुखमपत्यरहितानाम् ॥
चतुरस्रं धूर्तानामतिह्रस्वं भवति कृपणानाम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-जिसका मुख चौडा होवे उसको अभागा जानना। जिस मनुष्यका मुख स्त्रीके मुखके समान हो उसको सन्तानहीन जानना।

जिसका मुख चौकोन हो उसको धूर्त (मायावी) जानना, तथा जिसका मुख छोटा हो उसको कृपण (कंजूस) जानना ॥ ६३ ॥

ओष्ठवर्णन ।

आरक्तावधरौ श्रेष्ठौ मांसलत्ववर्तुलं मुखम् ॥
कुन्दपुष्पसमा दन्ता भाषितं कोकिलासमम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-जिसके ओष्ठ लाल लाल हों तो फल श्रेष्ठ जानना और जिसके ओष्ठके ऊपरका मांस दलदार होके मुख गोल होवे तो श्रेष्ठ फल जानना । जिसके दांत कुंदके फूलके समान श्वेत वर्ण हों तो श्रेष्ठ फल जानना । जिसका संभाषण कोकिलाके स्वरके समान हो तो श्रेष्ठ फल जानना अर्थात् ये लक्षण सुखके देनेवाले जानने ॥ ६४ ॥

दाक्षिण्ययुक्तमशठहंसशब्दसुखावहम् ॥
नासा समा समपुटा स्त्रीणां तु रुचिरा शुभा ॥ ६५ ॥

अर्थ-जिसका मुख दक्षिणावर्त (दाहिनी ओरको घूमा हुआ) महाप्रेमयुक्त (कोमल), हंसके समान शब्दवाला होवे तो ऐसा मुख सुखदायक होता है और जिसकी नासिका ऊंची, नासिकाके छिद्र लाल वर्ण हों तो शुभ फल जानना । स्त्रियोंका मुख रुचिर हो तो शुभ जानना ॥ ६५ ॥

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासालग्नोनलंबकः ॥
न पृथुबालेन्दुनिभौ भ्रुवौ चाथ ललाटके ॥ ६६ ॥

अर्थ-जिसके दोनों नेत्र नील (श्याम) कमलके समान होवें और नासिकाके समीपतक पहुँचे हुए नेत्र बहुत लंबायमान न होवें । द्वितीयाके चन्द्रमाके समान भृकुटी (भौंहें) नहीं होवें परन्तु धनुभृकुटी ललाटके ऊपर सुन्दर प्रतीत होवे तो बहुत उत्तम फल जानना । भावार्थ यह कि जो अंग देखनेमें सुन्दर सुडौल अथवा दर्शनीय होवे तो भाग्यको उदय करके सुखी करता है ॥ ६६ ॥

शुभमर्द्धेन्दुसंस्थाने मृत्युगः स्यादलोमशः ॥
अभामलं कर्णयोगं समं मृदुसमाहितम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-जिसके दोनों कान द्वितीयाके चन्द्रमाके समान होंय और ऊंचे कोमल तथा बराबर होवें, रोम नहीं होवें और मैले व श्यामता लिये न होवें ऐसे कान शुभ फलके देनेवाले जानने ॥ ६७ ॥

स्निग्धा नीलाश्च मृदवो मूर्द्धजाः कुटिलाः खराः ॥
स्त्रीणां शिरसमं श्रेष्ठं पादे पाणितले तथा ॥ ६८ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके केश चिकने, काले, कोमल, टेढे, खरदरे, स्त्रियोंके शिरके बालोंके समान होवें तो श्रेष्ठ जानना । तथा चरणके ऊपर व हाथके तलपर अर्थात् हाथकी पीठपर पूर्व कहे अनुसार होवें तो श्रेष्ठ फलके देनेवाले जानने ॥ ६८ ॥

बिम्बाधरो धनाढ्यः प्रज्ञावान् पाटलाधरो भवति ॥
प्रायो राज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः ॥ ६९ ॥

अर्थ-बिम्ब (कुंदरू) के समान लाल लाल होठवाला पुरुष धनवान् होता है । गुलाबके फूलके समान वर्णवाले होठोंका पुरुष बुद्धिवान् होता है और मूंगेके रंगके समान लाल लाल होठवाला पुरुष प्रायः राज्यको पाता है ॥ ६९ ॥

पीनोष्ठः सुभगः स्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः ॥
अतिविषमोष्ठो भीरुर्ह्रस्वोष्ठो दुःखितो भवति ॥ ७० ॥

अर्थ-जिसके होठ मोटे हों तो वह पुरुष अच्छे चाल चलनवाला होता है । जिस मनुष्यके होठ लम्बे हों वह भोग भोगनेवाला होता है । जिसके होठ विषम (कठोर) देखनेमें अच्छे न हों वे भयभीत होनेवाले पुरुषके जानने अर्थात् वह पुरुष डरपोक होवे । छोटे होठवाला पुरुष दुःखी होता है ॥ ७० ॥

दन्तलक्षण ।

द्वात्रिंशता नरपतिर्दशनैरंतैरेकविरहितैर्भोगी ॥
स्यात्त्रिंशता तनुधनोऽष्टाविंशत्या सुखी पुरुषः ॥७१॥

अर्थ–बत्तीस दांतवाला पुरुष राजा होता है और जो इकतीस होंय तो वह मनुष्य भोगी होता है तथा तीस दांत हों तो वह मनुष्य थोडे धनवाला होता है, जिसके अट्ठाईस दांत हों वह पुरुष सुखी होता है ॥ ७१ ॥

दारिद्र्यदुःखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः ॥
ऊर्ध्वमधस्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी ॥ ७२ ॥

अर्थ–जिसके उनतीस दांत होवें वह धनहीन और दुःखी होता है और इससेभी कमती दांत जिसके होवें वह मनुष्य दुःखी होता है ॥ ७२ ॥

कुन्दसुकुलोपमा स्युर्यस्यारुणपीडिकाः समाः सुघनाः ॥
दशनाः स्निग्धाः श्लक्ष्णास्तीक्ष्णा दंष्ट्राः स वित्ताढ्यः ७३

अर्थ–कुन्दकी कलीके समान जिस पुरुषके दांत होवें अथवा लाल फूलोंके समान बहुत घने चिकने स्वच्छ और तेज दाढोंवाले दांत होवें तो वह पुरुष धनवान् होता है ॥ ७३ ॥

स्यातां द्विजावधः प्राक् द्वादशगे मासि राजदन्ताख्यौ ॥
शस्तावूर्ध्वावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥७४ ॥

अर्थ–जो नीचेके दांत एक वर्षके मध्य प्रगट होवें तो ऐसे राजदन्त नामवाले शुभ फल देनेवाले जानने, तथा जो ऊपरके दांत एक वर्षके भीतर प्रगट होवें तो अशुभ जानना तथा जो एक साथ दोनों ओरके दांत निकलें तोभी अशुभ जानने ॥ ७४ ॥

जिह्वालक्षण ।

शौचाचारविहीनाः सितजिह्वाः सततं भवन्ति नराः ॥
धनहीनाः शितिजिह्वाः पापोपगता शबलजिह्वाः ॥७५॥

अर्थ–जिनकी जीभ सपेद हो वे मनुष्य निरंतर शौचाचारसे हीन होते हैं और जिनकी काली जीभ हो तो वे धनहीन होते हैं तथा जिनकी जीभ कबरी चित्र विचित्र रंगकी हो वे मनुष्य पापी होते हैं ॥ ७५ ॥

रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा येषाम् ॥
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदि वा त्रैविद्यवक्तारः ॥ ७६ ॥

अर्थ–जिन मनुष्योंकी जीभ लाल रंग, बडी पतली, नरम और बराबर हो वे मीठा भोजन करनेवाले होते हैं अथवा तीनों वेदोंके वक्ता होते हैं ॥ ७६ ॥

तालुलक्षण ।

रक्ताम्बुजतालुदरो भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः ॥
वित्ताढ्यः सिततालुर्गजतालुर्मंडलाधीशः ॥ ७७ ॥

अर्थ–जिसके तलुवेका बीच लाल कमलके समान होय वह पुरुष बलवान् और प्रतापी राजा होता है और जिसका तलुवा सपेद होय वह धनवान् होता है, गजसमान जिसका तालु हो वह मंडलका स्वामी होता है ॥ ७७ ॥

अरुणतालुर्गुणयुक्तस्तीक्ष्णाग्रा घंटिका शुभा स्थूला ॥
लम्बा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा नृणां न शुभा ७८

अर्थ–जिसका तालु लाल रंग हो वह गुणवान् होता है, जिसकी घांटी पैनी नोकदार हो तो शुभ होती है और मोटी, लम्बी, काली तथा कठोर और चपटी तालु होनेसे शुभ नहीं जानना ॥ ७८ ॥

नासिकालक्षण ।

उन्नतनासः सुभगो गजनासः स्यात्सुखी महार्थाढ्यः ॥ ऋजुनासो भोगयुतश्चिरजीवी शुष्कनासः स्यात् ॥ ७९ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यकी नाक ऊंची होती है उसका चाल चलन बहुत अच्छा होता है और जिसकी नाक हाथीकी नासिकाके समान होती है वह मनुष्य सुखी और बहुधनी होता है तथा जिसकी नाक सूखी होती है वह बहुत समयतक जीता है ॥ ७९ ॥

तिलपुष्पतुल्यनासः शुकनासो भूपतिर्मनुजः ॥
आढ्योऽग्रवक्रनासो लघुनासो शीलधर्मपरः ॥ ८० ॥

अर्थ-तिलके फूलके समान अथवा शुक (सुवा) के समान नाक जिसकी हो वह मनुष्य राजा होता है और जिसकी टेढी नाक होती है वह धनवान् होता है तथा जिसकी नाक छोटी होती है वह गुणधर्ममें तत्पर होता है ॥ ८० ॥

नेत्रलक्षण ।

हरितालाभैर्नयनैर्जायन्ते चक्रवर्तिनो नियतम् ॥
नीलोत्पलदलतुल्यैर्विद्वांसो मानिनो मनुजाः ॥ ८१ ॥

अर्थ-जिनके नेत्र हरतालके रंगके समान होते हैं वे पुरुष चक्रवर्ती राजा होते हैं और जिनके नेत्र नील कमलदलके समान हों वे पुरुष विद्वान् और मानी होते हैं ॥ ८१ ॥

सेनापतिर्गजाक्षश्चिरजीवी जायते सुदीर्घाक्षः ॥
भोगी विस्तीर्णाक्षः कामी पारावताक्षोऽपि ॥ ८२ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके नेत्र हाथीके नेत्रवाले होवें वह मनुष्य सेनापति होता है और जिसके नेत्र बहुत बडे होवें तो वह दीर्घजीवी

होता है अर्थात् बहुत कालतक जीता है, जिसके नेत्र लम्बे चौडे होते हैं वह भोगी होता है, जिसके नेत्र कबूतरके नेत्रोंके समान हों वह पुरुष कामी होता है ॥ ८२ ॥

लाक्षारुणैर्नरपतिर्नयनैर्मुक्तासितैः श्रुतज्ञानी ॥
भवति महार्थः पुरुषो मधुकाञ्चनलोचनैः पिङ्गैः ॥ ८३ ॥

अर्थ-लाखके रंगके समान लाल नेत्र जिसके हों वह मनुष्य राजा होता है और जिसके नेत्र मोतीके समान श्वेत वर्ण हों वह पुरुष शास्त्रका जाननेवाला होता है, जिसके नेत्र पीले और शहद व सोनेके रंगके समान हों वह पुरुष बहुत धनी होता है ॥ ८३ ॥

बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ॥
विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रमन्ति तारुण्यम् ॥ ८४ ॥

अर्थ-जिसके नेत्र धूम्र वर्ण (धुमैले) होते हैं वे पुरुष बहुत आयुवाले होते हैं और जिनकी आंख झुकी हुई होती है वे थोडी आयुवाले होते हैं तथा जिनके नेत्र ऐंठे अकडे अथवा गोल होते हैं वे पुरुष तरुणाईका उल्लंघन नहीं करते हैं अर्थात् जवानीसे पहलेही मृत्युको प्राप्त होते हैं ॥ ८४ ॥

श्यावदृशां सुभगत्वं स्निग्धदृशां भवति भूरिभोगित्वम् ॥ स्थूलदृशां धीमत्त्वं दीनदृशां धनविहीनत्वम् ॥ ८५ ॥

अर्थ-जिसके नेत्र धूमले हों वह पुरुष भाग्यवान् होता है। जिसके नेत्र चिकने हों, वह पुरुष बहुत भोग भोगनेवाला होता है। जिसके नेत्र मोटे हों वह पुरुष बुद्धिवान् होता है तथा जिसके नेत्र दीन दृष्टिवाले हों वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ ८५ ॥

अहिदृष्टिः स्याद्रोगी विडालदृष्टिः सदापापः ॥
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ॥८६॥

अर्थ-जिसकी दृष्टि सांपकी दृष्टिके समान हो वह पुरुष रोगी होता है। जिसकी दृष्टि बिलावकी दृष्टिके समान हो वह सदा पापी होता है। तथा जिसकी दारुण (भयानक) दृष्टि हो वह मनुष्य दुष्ट होता है तथा जिसकी दृष्टि कुक्कुट (मुरगे) के समान हो वह कलह-प्रिय होता है अर्थात् उसको लडाई अच्छी लगती है ॥ ८६ ॥

अन्धः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् ॥
काणात्केकरतोऽपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥ ८७ ॥

अर्थ-अंधा और काणा मनुष्य क्रूर अर्थात् दुष्टस्वभाववाला होता है। काणे मनुष्यसेभी अधिक क्रूर वह होता है कि जो वारं-वार दृष्टि फेरता है तथा काणे और दृष्टि फेरनेवालेसे अधिक क्रूर (खोटा) वह होता है जो आंखको चुराता है ॥ ८७ ॥

अतिदुष्टा घूकाक्षा विषमाक्षा दुःखिताः परिज्ञेयाः ॥
हंसाक्षा धनहीना व्याघ्राक्षाः कोपना मनुजाः ॥ ८८ ॥

अर्थ-जिनके नेत्र उल्लू पक्षीके समान हों वे नर अतिदुष्ट होते हैं और जिनके नेत्र विषम अर्थात् छोटे बडे हों वे मनुष्य दुःखी होते हैं। जिनके नेत्र हंसकेसे हों वे पुरुष दरिद्री (धनहीन) होते हैं। तथा जिनके नेत्र व्याघ्रकेसे हों वे मनुष्य क्रोधी होते हैं ॥ ८८ ॥

अतिपिंगलैर्विवर्णैर्विभ्रान्तैर्लोचनैरशुभः ॥
अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैर्नरा निःस्वाः ॥ ८९ ॥

अर्थ-जिसके नेत्र बहुत कंजे, अशोभित रंगके, फिरते हुए और चंचल होवें वह मनुष्य अच्छा नहीं होता है और बहुत छोटे, लाल लाल, रूखे, गीले और मैले नेत्र जिनके हों वे मनुष्य निर्धनी होते हैं ॥ ८९ ॥

भौंहलक्षण ।

धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ॥
निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ॥ ९० ॥

अर्थ-जिसकी भौंहें ऊंची और देखनेमें अच्छी होवें तो वे पुरुष धनवान्, पुत्रवान् होते हैं और जिनकी भौंहें नीची और देखनेमें अ-च्छी नहीं होवें वे पुरुष धन सुख और सन्तानसे हीन होते हैं॥९०॥

कर्णलक्षण ।

आढ्यः प्रलम्बकर्णः सुखी स्वभावपीनमृदुकर्णः ॥
मतिमान्मूषककर्णश्चमूपतिः शङ्खकर्णः स्यात्॥९१॥

अर्थ-जिसके कान लम्बे, स्वाभाविक नरम, तथा मोटे हों तो उस मनुष्यको पहिली अवस्थामें सुख प्राप्त होता है। जिसके कान मूसेके कानके समान हों वह मनुष्य बुद्धिवान् होता है, जिसके कान शंखके समान हों वह चमूपति (सेनाका स्वामी) होता है ॥ ९१ ॥

ह्रस्वैर्निःस्वाः कर्णैर्निर्मांसैः पापमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
व्यालंबिभिः शिरालैः क्रूराः स्युः प्रायशः कुटिलैः॥९२॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके कान छोटे और मांसहीन हों वे दरिद्री धनहीन और पापरोगसे मृत्यु पानेवाले अथवा पापी होते हैं और जिनके कान लम्बे नसदार व टेढे होवें वे मनुष्य बहुधा कुटिल (दुष्टस्वभाव) होते हैं ॥ ९२ ॥

चिपिटश्रवणो भोगी दीर्घायुर्दीर्घरोमशः श्रवणः ॥
अतिपीनमहाभोगी श्रवणो जननायको भवति॥९३॥

अर्थ-जिसके कान चिपके होते हैं वह मनुष्य भोगी होता है। जिसके कानोंपर बडे बडे रोम हों वह दीर्घजीवी (बहुत कालतक जीनेवाला) होता है। जिसके कान बहुत मोटे हों वह महाभोगी

(अधिक सुख पानेवाला) और जननायक (बहुतसे मनुष्योंका स्वामी) होता है ॥ ९३ ॥

हनु (ठोंडी) लक्षण ।

पुण्यवतामिह चिबुकं वृत्तं मांसलमदीर्घलघुसु-
संयुतं मृदुलम् ॥ अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्र-
भागं दरिद्राणाम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-इस जगत्में जिन मनुष्योंकी ठोंडी गोल, मांससे भरी, बहुत बडी हो न छोटी हो और कोमल सुडौल होती है वे पुरुष पुण्यवान् होते हैं और जिनकी ठोंडी बहुत पतली, बडी, मोटी, दो भागवाली होती है वे मनुष्य दरिद्री होते हैं ॥ ९४ ॥

हनुयुगलं सुश्लिष्टं चिबुकोभयपार्श्वस्थितं पुंसाम् ॥
दीर्घं चक्रं शस्तं पुनरशुभं भवति विपरीतम् ॥ ९५ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी ठोंडी दोनों ओरसे मिली हुई, गोल, सुडौल हो तो शुभ फलकी देनेवाली जाने और जो इससे विपरीत ठोंडी हो तो अशुभ फलकी देनेवाली जाने ॥ ९५ ॥

मुच्छलक्षण ।

सान्तर्द्वितीयदशमिह शुक्रोद्रेकोऽधिकः
क्रमेण नृणाम् ॥ तदयं श्मश्रुभेदस्तद्वि-
कृतिः षोडशे वर्षे ॥ ९६ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी मूछें वीस वर्षके भीतर अथवा इक्कीस वर्षके भीतर निकस आवें वे वीर्यको प्रगट करनेवाली होती हैं और जो सोलह वर्षके भीतर मूछें आवें तो वीर्यमें विकार उत्पन्न करनेवाली जाने ॥ ९६ ॥

परदाररताश्चौराः श्मश्रुभिररुणैर्नटा नखैः स्थूलैः ॥
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः केशान्विता बहुशः ९७

अर्थ-जिन मनुष्योंकी मूंछ व दाढीके बाल लाल लाल हों तो वे पुरुष परस्त्री रमण करनेवाले होते हैं और जिनके नख मोटे, रूखे, पतले, फटे, कंजेके समान होवें और दाढी मूछमें केश बहुत होवें ऐसे मनुष्य नट अथवा नटके समान स्वभाववाले होते हैं ॥ ९७ ॥

कपोललक्षण ।

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ॥
पापास्ते दुःखजुषो भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः ॥ ९८ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके कपोल (गाल) मांसरहित (सुखटे) हों और मूछें छोटी हों और कपोलोंपर रोम अधिक हों वे पापी दुःखभागी होते हैं तथा भाग्यहीन और दूसरोंके दूत होते हैं ॥ ९८ ॥

सुखिनः समुन्नतैः स्युः परिपूर्णा भोगयुताश्च मांसयुतैः ॥
सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैर्गंडैर्नराधिपा नरा धन्याः ॥ ९९ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके कपोल ऊंचे हों वे मनुष्य सुखी होते हैं और जिनके कपोल मांस भरे अर्थात् उठे होवें वे परिपूर्ण भोगी और सुखी होते हैं तथा जिनके कपोल सिंह वा हाथीके समान होवें वे पुरुष उत्तम होते हैं ॥ ९९ ॥

पृष्ठलक्षण ।

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवंशपृष्ठोऽपि ॥
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविच्छेदम् ॥ १०० ॥

अर्थ-जिसकी पीठ नसीली और टेढी हो वह मनुष्य निर्धनताको प्राप्त होता है और जिसकी पीठ अधिक रोमवाली हो वह कष्ट पाता है तथा जिसकी पीठ मोटी हो वह भाइयोंद्वारा नाशको प्राप्त होता है ॥ १०० ॥

कच्छपपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ॥
धनसम्पत्तिसुसेनाधिपतिः शार्दूलपृष्ठोऽपि ॥ १०१ ॥

अर्थ–जिसकी पीठ कछुवेकी पीठके समान हो वह मनुष्य राजा होता है और जिसकी पीठ घोडेकी पीठके समान हो वह भोगी होता है तथा जिसकी पीठ शार्दूल (व्याघ्र) की पीठके समान हो वह पुरुष धन और सम्पत्तिसे युक्त और सेनापति होता है ॥ १०१ ॥

ग्रीवालक्षण ।

ह्रस्वग्रीवः शस्तो वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः ॥
कम्बुग्रीवस्तु भवेदेकातपवारणो नृपतिः ॥ १०२ ॥

अर्थ–जिसकी ग्रीवा (घाँच) छोटी हो वह श्रेष्ठ जानना और जिसकी ग्रीवा गोल हो वह सुखी, धनी व भोगी होता है तथा जिसकी ग्रीवा कम्बु (शंख) के समान हो वह एकछत्रधारी राजा होता है ॥ १०२ ॥

रासभकरभग्रीवो दुःखी स्याद्दांभिको बकग्रीवः ॥
शुष्कशिरालग्रीवश्चिपिटग्रीवश्च धनहीनः ॥ १०३ ॥

अर्थ–जिसकी ग्रीवा गर्दभ और ऊंटकी ग्रीवाके समान हो वह मनुष्य दुःखी होता है और जिसकी ग्रीवा बगुलेकी ग्रीवाके समान हो वह दंभी (पाखंडी) होता है तथा जिसकी ग्रीवा सूखी, नसीली और चपटी हो वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ १०३ ॥

महिषग्रीवः शूरो लम्बग्रीवोऽपि घस्मरः सततम् ॥
पिशुनो वक्रग्रीवः शस्तविनाशी महाग्रीवः स्यात् ॥

अर्थ–जिसकी ग्रीवा महिष (भैंसे) की ग्रीवाके समान हो वह योद्धा होता है और जिसकी ग्रीवा लम्बी हो वह बहुत खानेवाला होता है तथा जिसकी ग्रीवा टेढी हो वह चुगुलखोर होता है और

जिसकी ग्रीवा बडी हो वह उत्तम काममें विघ्न करनेवाला होता है अर्थात् बने कामको बिगाड देता है ॥ १०४ ॥

ललाटरेखा ।

भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् ॥
वर्षाण्यशीतिरायुर्वसुधेशत्वं पुनर्भवति ॥ १०५ ॥

अर्थ–जिसके ललाटपर चार रेखायें प्रगट दीख पडे वह पुरुष अस्सी वर्षपर्यन्त जीता है और राजा होता है ॥ १०५ ॥

भाले लेखाहीने पंचाधिकविंशतिसमाः ॥
आयुः स्याद्ध्रुवमखिला जायंते सम्पदः सपदि १०६

अर्थ–जिसका ललाट रेखाहीन हो उसकी आयु पचीस वर्षकी होती है और शीघ्र उसको सम्पदा प्राप्त होती है ऐसा निश्चय जानना ॥ १०६ ॥

स्यादायुर्लेखाभिस्तिसृभिर्द्वाभ्यामथैकया नियतम् ॥
शरदां सप्तति षष्टिं चत्वारिंशदपि क्रमशः ॥ १०७ ॥

अर्थ–जिसके ललाटपर तीन रेखायें हों उसकी आयु सत्तर वर्षकी होती है, जिसके ललाटपर दो रेखायें हों वह साठ वर्षतक जीता है और जिसके मस्तकपर एक रेखा हो वह चालीस वर्षपर्यन्त जीवन धारण करता है इस प्रकार क्रमसे आयुका निश्चय होता है ॥ १०७ ॥

यदि वा तिर्यग्दीर्घास्तिस्रो रेखाः शतायुषां भाले ॥
भूमिजुषां तु चतस्रः पुनरायुः पंचहीनशतम् ॥ १०८ ॥

अर्थ–यदि वा जिसके ललाटपर तिरछी और बडी तिन रेखायें होती हैं उसकी आयु सौ वर्षकी जानना, यदि चार रेखायें हों तो पचानवें वर्षकी आयु जानना ॥ १०८ ॥

जीवति वर्षाण्यशीतिः केशान्तोपगते रेखे ॥
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ॥ १०९ ॥

अर्थ-जिसके केशोंके अन्ततक एक रेखा हो वह पुरुष अस्सी वर्षतक जीता है, तथा जो मस्तक अनेक रेखाओंकरके युक्त होय तो वह नब्बे वर्षतक जीता है ॥ १०९ ॥

रेखा सप्ततिरायुः पंचैताग्रस्थिता पुनः षष्टिः ॥
बह्व्यो नृणां शतार्द्धं दशोनमपि भंगुरा ददते ॥ ११० ॥

अर्थ-जिसके आगे भालपर पांच रेखायें हों तो वह मनुष्य सत्तर वर्षतक जीता है अथवा साठ वर्षतक जीवन धारण करता है। जिन मनुष्योंके भालपर बहुत रेखायें हों वे पचास वर्षतक जीते हैं तथा यदि वेही पांच रेखा स्थित हों तो दश कम पचास अर्थात् चालीस वर्षपर्यन्त जीवन होवे है ॥ ११० ॥

भ्रूयुग्मोपगताभिस्त्रिंशद्वर्षाणि जीवति शरीरी ॥
विंशत्यब्दानि पुनर्लेखाभिर्वा च वक्राभिः ॥ १११ ॥

अर्थ-जिसके दोनों भौंहोंके ऊपर रेखा होय तो वह मनुष्य तीस वर्षपर्यन्त शरीर धारण करता है और जो वेही रेखायें टेढी होंय तो वीस वर्षपर्यन्त वह जीवन धारण करता है ॥ १११ ॥

छिन्नाभिरगम्यस्त्रीगामी क्षुद्राभिरपि नरोऽल्पायुः ॥
रेखाभिर्मनुजः स्यादित्याह सुमन्तविप्रेन्द्रः ॥ ११२ ॥

अर्थ-जिसके भालपर टूटी कटी रेखायें हों तो वह मनुष्य नहीं गमन करनेवाली अर्थात् अयोग्य स्त्रियोंके साथ रमण करता है और जिसके भालपर छोटी रेखायें होती हैं वह मनुष्य थोडी आयुवाला होता है इस प्रकार द्विजवर सुमन्तने मनुष्यकी रेखाओंका ऐसा फल कथन किया है ॥ ११२ ॥

स्कन्धलक्षण ।

भुग्नौ मांसविहीनावंसौ नतरोमशौ कृशौ यस्य ॥
निर्लक्षणेन लक्ष्म्या नामापि नाकर्णितं तेन ॥ ११३ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके कन्धे टेढे, झुके हुए, मांसहीन, रोमवाले, दुबले (पतले) होंय वह इस लक्षणसे लक्ष्मीरहित होता है उसको कभी लक्ष्मीका नामभी न सुन पडे ऐसा दारिद्री होवे ॥ ११३ ॥

वृषवहीर्घौ स्कन्धौ निर्मांसौ भारवाहकौ पुंसाम् ॥
कुटिलौ कृशावतितनू खेदकरौ रोमशौ बहुशः ११४ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके कन्धे बैलके समान बडे मांसहीन होंय वे बोझके उठानेवाले होते हैं और जो टेढे, दुबले, छोटे तथा अधिक केशोंसे युक्त दोनों कंधे होवें तो खेद (शोक) के करनेवाले जानने ॥ ११४ ॥

अत्युच्छ्रितौ च अंसौ किंचिद्राह्वोः समुन्नतिं दधतः ॥
सुश्लिष्टसन्धिबन्धौ वपुषोर्थं निशूरयोः स्याताम् ॥ ११५ ॥

अर्थ-जो कन्धे भली भांति मिले हुए जोडबन्ध और बाहुसे कुछ ऊंचे होवें तो ऐसे कन्धे धनवान् और शूर (वीर) पुरुषोंके होते हैं ॥ ११५ ॥

बाहुलक्षण ।

निर्मांसौ चैव भग्नालौ श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ ॥
आजानुलम्बितौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरः ॥ ११६ ॥

अर्थ-जिसकी दोनों भुजायें मांसहीन अर्थात् कुछ दुबली होवें अथवा बराबर बडी और मोटी सुडौल होवें तथा जानुपर्यन्त लम्बायमान, गोल और पुष्ट भुजायें होवें तो ऐसी भुजाओंवाला पुरुष महाराजा होता है ॥ ११६ ॥

निःस्वानां रोमशौ ह्रस्वौ भुजौ दारिद्र्यदायकौ ॥
अरोमशौ तु सुखिनो श्रेष्ठो करिकरप्रभौ ॥ ११७ ॥

अर्थ-जिसकी दोनों भुजाओंपर रोम बहुत होवें और भुजायें छोटी हों तो ऐसी भुजायें दारिद्र्यदायक होती हैं और जो भुजायें हाथीकी सूंडके समान लंबायमान और रोमरहित होवें तो ऐसी भुजायें सुखी करनेवाली होती हैं ॥ ११७ ॥

वक्षःस्थललक्षण ।

उरसा घनेन धनवान्पीनेन भटस्तथोर्द्धरोम्णा स्यात् ॥
निःस्वस्तनुना विषमेणाकालमृतिराकिंचनश्च नरः ११८

अर्थ-जिसकी छाती दृढ हो वह धनवान् होता है और जिसकी छाती कठोर व रोमोंसे युक्त हो वह भट (योद्धा) होता है तथा जिसकी छाती छोटी होवे वह धनहीन होता है, जिसकी छाती ऊंची नीची होती है उसकी अकालमृत्यु होती है और वह मनुष्य दरिद्री होता है ॥ ११८ ॥

स्तनलक्षण ।

वृत्ताः स्तनाः प्रशस्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसाम् ॥ विषमाः परुषा विकटाः प्रायो दुःखाय जायन्ते ॥ ११९ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके स्तन गोल, चिकने, कोमल, सुडौल, बराबर होवें वे अच्छे सुखके देनेवाले जानने और जो नीचे ऊंचे, कठोर, देखनेमें कुडौल होवें ऐसे स्तन प्रायः दुःखके देनेवाले होते हैं ॥ ११९ ॥

उदरलक्षण ।

भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयः परदारभोगी च ॥
वृत्तोदरः सुखी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः ॥१२०॥

अर्थ-जिसका उदर (पेट) भेक (मेंडक) के पेटके समान हो वह मनुष्य राजा होता है और जिसका पेट बैलके पेटके समान हो वह पराई स्त्रीके साथ रमण करनेवाला होता है, तथा जिसका पेट गोल हो वह मनुष्य सुखी होता है और मीन (मछली) व व्याघ्रके पेटके समान पेटवाला पुरुष भाग्यवान् होता है ॥ १२० ॥

जठरं यस्य समं स्यादभितः स पुमान्महार्थाढ्यः ॥
सिंहनिभं यस्य पुनः प्राप्नोति स चक्रवर्तित्वम् १२१॥

अर्थ-जिस मनुष्यका पेट सब ओरसे बराबर हो वह पुरुष बहुत धनवान् होता है और जिसका पेट सिंहके पेटके समान हो वह चक्रवर्ती राज्यको प्राप्त होता है, परंतु राजकुलमें उत्पन्न होनेसे यह फल ठीक जानना, अन्यथा धनवान् ऐश्वर्यवान् होवे ॥ १२१ ॥

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्योदरोदरोपेतः ॥
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुक्सदृशो हरश्चौरः॥१२२॥

अर्थ-जिसका पेट कुत्ता और भेडियाके पेटके समान हो वह दरिद्री (धनहीन) होता है और जिसका पेट शृगाल (सियार) के पेटके समान हो वह डरपोक होता है तथा जिसका पेट दुबला है वह पापी होता है और जिसका पेट चीतेके पेटके समान हो वह मनुष्य चोर होता है ॥ १२२ ॥

पिठरजठरो दरिद्रो घटजठरो दुर्भगः सदा दुःखी ॥
भुजगजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः१२३

अर्थ-जिसका पेट हंडियाके समान हो वह दरिद्री (धनहीन) होता है, जिसका पेट घडेके आकार हो वह अभागी सदा दुःखी रहता है, जिसका पेट भुजग (सर्प) के समान हो वह नर दूसरेकी सेवा करनेवाला व बहुत भोजन करनेवाला होता है ॥ १२३ ॥

नाभिलक्षण ।

विस्तीर्णमांसोपचिता गभीरा विपुला शुभा ॥
नाभिः प्रदक्षिणावर्ती मध्यं त्रिवलिशोभनम् ॥ १२४ ॥

अर्थ-जिसकी नाभि (तोंदी) विस्तारवाली और मांससहित हो अर्थात् मोटी और गंभीर (गहिरी) व बडी हो तथा दक्षिणावर्त (दाहिनी ओरसे घूमी हुई) नाभिके भीतर त्रिवली होय ऐसी नाभि शुभ होती है अर्थात् ऐसी नाभिवाला पुरुष सुख ऐश्वर्यको प्राप्त होता है इससे विपरीत हो तो अशुभ जानना ॥ १२४ ॥

कुक्षिलक्षण ।

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ॥
उत्ताना यस्य पुनर्नारीवृत्तेन जीवते सोऽपि ॥ १२५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी कुक्षि (कोंख) गहिरी हो वह पुरुष प्रायः कहीं ऊंचेसे गिर पडे और जिसकी कोंख ऊंची होय वह पुरुष स्त्रीवृत्तिसे जीवन धारण करे अर्थात् स्त्रीकी जीविकासे उसका निर्वाह होवे ॥ १२५ ॥

क्षोणिपतिस्तनुकुक्षिः शूरो भोगान्वितश्च समकुक्षिः ॥
धनहीन उच्चकुक्षिर्मायावी स्याद्विषमकुक्षिः ॥ १२६ ॥

अर्थ-जिसकी कोंख छोटी हो वह मनुष्य राजा होता है और जिसकी कोंख बराबर हो वह शूर (वीर) और भोगी होता है तथा जिसकी कोंख ऊंची हो वह पुरुष धनहीन होता है और जिसकी कोंख नीची ऊंची हो वह मायावी (कपट करनेवाला) होता है ॥ १२६ ॥

हस्तलक्षण ।

विस्तीर्णौ ताम्रनखौ स्यातां कपिवत्करौ धनाढ्यस्य ॥
शार्दूलवद्विरूक्षौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसौ ॥ १२७ ॥

अर्थ-जिसके दोनों हाथ विस्तारवाले अर्थात् लम्बे चौडे लाल लाल नखवाले बन्दरके हाथके समान होवें वह पुरुष धनवान् होता है और जिसके हाथ व्याघ्रकेसे सूखे कुडौल मांसरहित हों वह पुरुष धनहीन (दरिद्री) होता है ॥ १२७ ॥

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः करमूलमंकितं यस्य ॥
धनकांचनरत्नयुतं श्रीः पतिमिव भजति लुब्धेव १२८

अर्थ-जिसका हाथ तीन पूर्ण रेखाओंसे युक्त हो अर्थात् तीन रेखायें अखंडित होकर पहुँचेमें नीचेसे ऊपरतक होवे उस पुरुषको लक्ष्मी धन, कांचन रत्नकरके सहित निर्लोभ हो पतिके समान भजती है अर्थात् उसके घरमें लक्ष्मीका निरन्तर निवास रहे ॥ १२८ ॥

अरुणेनाढ्यः पीतेनागम्यस्त्रीरतिः करतलेन ॥
सितासितेन दरिद्रो नीलेनापेयपायी स्यात् ॥ १२९ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी हथेली लाल हो वह धनी होता है, जिसकी हथेली पीली हो वह अनुचित स्त्रियोंके संग रमण करता है, जिसकी हथेली श्वेत व काली हो वह दरिद्री होता है, तथा जिसकी हथेली नील वर्ण वह हो नहीं पीने योग्य पदार्थका पान करता है ॥ १२९ ॥

अंगुष्ठलक्षण ।

वृत्तो भुजगफणाकृतिरुत्तुंगो मांसलः शुभोऽङ्गुष्ठः ॥
सशिरो ह्रस्वश्चिपिटोऽचक्रो विपुलः स पुनरशुभः १३०

अर्थ-जिसका अंगूठा गोल और सांपके फनके आकार व ऊंचा, मांससे भरा हुआ होय तो शुभ जानना तथा जिसके अंगूठेमें नसें दीख पडें और छोटा, चपटा, चक्रहीन और चौडा हो तो ऐसा अंगूठा अच्छा नहीं होता है ॥ १३० ॥

हस्तांगुलिलक्षण ।

श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवो घनादलानीव पद्मस्य ॥
ऋजवोऽङ्गुलयः स्निग्धाः सेभसंख्यान्वितं दधति १३१

अर्थ-जिसके हाथकी अंगुली सुन्दर, गोल, कोमल, घनी, कमलदलाकार, सीधी और चिकनी होय तो वह हाथियोंकी संख्याको धारण करता है अर्थात् अनेक हाथी उसके यहां होवें ॥ १३१ ॥

पुनरंगुष्ठांगुलिलक्षण ।

ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धस्तुंगो वृत्तः प्रदक्षिणावर्तः ॥
अंगुष्ठोपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ॥१३२॥

अर्थ-जिसका अंगूठा सीधा, चिकना, ऊंचा, गोल और दाहिनी ओरको घूमा हुआ, कठोर, बराबर पोरुवेवाला हो तो उसको धनवान् जानना ॥ १३२ ॥

सततं भवन्ति वलिताः सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्माः॥
पाण्यंगुलयः सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ॥ १३३ ॥

अर्थ-जिनके हाथकी अंगुली निरन्तर मिली हुई होती हैं वे मनुष्य भाग्यवान् और उत्तम बुद्धिवाले होते हैं और जिनके हाथकी अंगुली सीधी और बडी होती हैं वे मनुष्य अधिक आयुवाले होते हैं ॥ १३३ ॥

नियतं कनिष्ठिकांगुलिरनामिकापर्व उल्लंघ्य ॥
यद्यधिकतरा पुंसां धनमधिकं जायते प्रायः॥ १३४ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी छोटी अंगुली अपने समीपकी अंगुली (अनामिका) के पोरुवेको उल्लंघन कर जाय अर्थात् बडी होय तो प्रायः उसके धन अधिक होता है ॥ १३४ ॥

दीर्घायुरंगुलीभिः सौभाग्ययुतः सुदीर्घपर्वाभिः ॥
विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिर्भवति धनहीनः १३५

अर्थ-जिस पुरुषकी अंगुली लम्बी होय तो वह दीर्घायु (बडी उमरवाला) होता है और जिसकी अंगुलियोंके पोरुवे पडे होवें वह भाग्यवान् होता है । तथा जिसकी अंगुली विरली, टेढी और सूखी हों वह धनहीन होता है ॥ १३५ ॥

कटिलक्षण ।

यस्य कटिः स्याद्दीर्घा पीना पृथुला भवेत्स वित्ताढ्यः ॥
सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः शार्दूलकटिश्च भूनाथः ॥ १३६ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यकी कटि (कमर) लंबी, मोटी और चौडी हो वह धनवान् होता है और जिसकी कटि सिंहकी कटिके समान हो वह मनुष्योंमें इन्द्रसमान (राजा) होता है । तथा जिसकी कटि व्याघ्रकी कटिके समान हो वह पुरुष पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ १३६ ॥

रोमशकटिर्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो भवति मनुजः ॥
शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखी संकटकटिः पापः ॥१३७॥

अर्थ-जिसकी कटि रोमसहित हो वह मनुष्य दरिद्री होता है और जिसकी कटि छोटी हो वह पुरुष अभागा होता है, तथा जिसकी कटि कुत्ता, वानर और ऊंटकी कटिके समान हो वह मनुष्य दुःखी रहता है, जिसकी कटि (कमर) सिकुडी हो वह पाप करनेवाला होता है ॥ १३७ ॥

गुद व अंडकोशका लक्षण ।

यतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृतः शोणः ॥
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः॥१३८

र्थ-मनुष्योंकी गुदा मांस भरी, गहिरी, कोमल, गोल और लाल लाल हो वह शुभ फलकी देनेवाली जानना और जो इससे

विपरीत अर्थात् सूखी, कुछ गहिरी, कठोर, गोलाईसे रहित, स्याही लिये होवे तो अशुभ जानना ॥ १३८ ॥

श्लक्ष्णैः समैर्नृपत्वं चिरमायुर्भवति लम्बितैर्वृषणैः ॥
जलमरणमद्वितीयैर्मनुजानां कुलविनाशोऽपि १३९॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके अंडकोश सुन्दर बराबर हों वे मनुष्य राजपदवीको प्राप्त होते हैं, जिन मनुष्योंके अंडकोश लम्बे हों,वे बहुत कालतक जीवन धारण करनेवाले होते हैं, तथा जिन मनुष्योंके एकही अंडकोश होता है वह जलमें मृत्यु पानेवाला और निज कुलको विनाश करनेवाला होता है ॥ १३९ ॥

निःस्वः शुष्कस्थूलै रम्यरमणीरतास्तुरंगसमैः ॥
पुनरर्द्धोर्द्धैर्वृषणैर्भवन्ति न चिरायुषः पुरुषाः ॥ १४०॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके सूखे और मोटे अंडकोश होते हैं वे धनहीन होते हैं, जिनके अंडकोश घोडेके अंडकोशके समान हों वे उत्तम स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाले होते हैं तथा जिनके अंडकोश प्रमाणसे आधे होंय वे पुरुष बहुत काल जीनेवाले होते हैं ॥१४०॥

स्त्रीलोलत्वं विषमैः प्राक्पुत्रो दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः ॥
वामोन्नतैश्च तैरपि दुःखेन समं भवति दुहिता॥१४१॥

अर्थ-जिसके अंडकोश नीचे ऊंचे होंय वह मनुष्य स्त्रियोंमें चंचल होता है अर्थात् स्त्रियोंमें अधिक स्नेह बढाकर अपनी चंचलता दिखाता है, जिसका अंडकोश दाहिना ऊंचा होय उसके पहले पुत्र उत्पन्न होता है तथा जिसका वायां अंडकोश ऊंचा होय तो दुःखपूर्वक कन्या उत्पन्न होती है ॥ १४१ ॥

लिंगलक्षण ।

महद्भिरायुराख्यातं ह्यल्पलिंगो धनी नरः ॥
अपत्यरहितो लोके स्थूललिंगो धनोज्झितः ॥१४२

अर्थ-लिंग चार प्रकारके होते हैं, सात अंगुल, आठ अंगुल, नौ अंगुल, दश अंगुलका, इनमें जिसका लिंग छोटा हो वह अधिक आयुवाला और धनवान् होता है और संसारमें स्थूल (मोटे) लिंगवाला सन्तानहीन और निर्धनी (दरिद्री) होता है ॥ १४२ ॥

मेढ़े वामनके चैव सुतान्नरहितो भवेत् ॥
वक्रेऽन्यथा पुत्रवान्स्याद्दारिद्र्यं विन्दते त्वधः १४३॥

अर्थ-जिसका लिंग टेढा और छोटा अथवा बाईं ओरको झुका हुआ हो वह पुत्र और अन्न धनसे रहित होता है, तथा जो दाहिनी ओरको झुका हुआ प्रतीत हो तो वह पुरुष पुत्रवान् होता है और जो नीचेकी ओरको झुका हुआ हो तो दरिद्री होता है ॥ १४३ ॥

अल्पे तु तनयो लिंगे शिरालेऽथ सुखी नरः ॥
स्थूलग्रन्थियुते लिंगे भवेत्पुत्रादिसंयुतः ॥ १४४॥

अर्थ-जिसका लिंग छोटा और ऊपरकी गांठ सुडौल लाल लाल ऊपरको उठी हुई हो तो वह मनुष्य सम्पूर्ण सुखको भोग करनेवाला होता है और जो लिंगके ऊपरकी गांठ मोटी हो अथवा बडी हो तो वह पुत्र आदिसे युक्त होता है ॥ १४४ ॥

दीर्घलिंगेन दारिद्र्यं स्थूललिंगेन निर्धनः ॥
कृशलिंगेन सौभाग्यं ह्रस्वलिंगेन भूपतिः ॥ १४५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषका लिंग दीर्घ (बडा) हो वह दरिद्री होता है, जिसका स्थूल (मोटा) हो वह धनहीन होता है, जिसका कृश (पतला) हो वह भाग्यवान् (सुखी) होता है और जिसका छोटा हो वह पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ १४५ ॥

कर्कशैः कठिनैर्लिंगैः परदाररतः सदा ॥
रमते च सदा दास्या निर्धनो भवति ध्रुवम् ॥ १४६ ॥

अर्थ-जिसका लिंग कर्कश (कठोर) और कडा हो वह मनुष्य सदा पराई स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाला तथा निरन्तर दासीके साथ रमण करनेवाला और धनहीन होता है ॥ १४६ ॥

कृष्णलिंगेन सूक्ष्मेण रक्तलिंगेन भूपतिः ॥
परस्त्रीं रमते नित्यं नारीणां वल्लभो भवेत् ॥ १४७ ॥

अर्थ-जिसका काला व पतला लिंग हो और लाल वर्ण हो वह पृथ्वीका स्वामी और सदा पराई स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाला और स्त्रियोंका प्यारा होता है ॥ १४७ ॥

कृशलिंगेन रक्तेन लभते चोत्तमांगनाः ॥
राज्यं सुखं च दिव्यं च कन्यकायाः पतिर्भवेत् १४८

अर्थ-जिसका लिंग दुबला और लाल वर्ण हो वह उत्तम स्त्रियोंको प्राप्त होकर राज्य और सुखको पाता है तथा कन्याका पति होता है अर्थात् थोडी अवस्थावाली स्त्री पाता है ॥ १४८ ॥

वीर्यलक्षण ।

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धसवर्णेन रेतसा नृपतिः ॥
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद्दुःस्थः श्यामवर्णेन॥ १४९ ॥

अर्थ-जिसका वीर्य जामुनके रंगके समान प्रतीत हो तो वह मनुष्य सुखी होता है, जो दूधके समान श्वेत वर्ण वीर्य हो तो वह राजा होता है तथा धुमैल वीर्य हो तो वह दुःखी रहता है और जो श्याम वर्ण वीर्य हो तो वह दुःखपूर्वक रहनेवाला होता है ॥ १४९ ॥

यस्य च्यवते रेतो लघुमैथुनगामिनो बहुस्निग्धम् ॥
दीर्घायुः सम्पत्तिं पुत्रानपि विन्दते स पुमान् ॥१५०॥

अर्थ-जो थोडी देर मैथुन करनेवाले पुरुषका वीर्य अतिचिकना हो तो वह पुरुष बहुत आयुवाला और सम्पत्ति व पुत्रोंवाला होवे ॥ १५० ॥

न पतति शुक्रं स्तोकं चिरमैथुनसंगतस्यापि ॥
दारिद्र्यं सोऽल्पायुर्बहुकन्याजनकतां भजते १५१॥

अर्थ-जिस पुरुषका वीर्य बहुत काल मैथुन करनेपर बहुत थोडाभी न गिरे तो वह पुरुष दरिद्री, थोडी आयुवाला और बहुत कन्याओंको उत्पन्न करनेवाला होवे ॥ १५१ ॥

रुधिरलक्षण ।

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्यांगे भवति शोणितं न चिरम् ॥ स वहति स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधाम् ॥ १५२ ॥

अर्थ-जिसके अंगमें रुधिर मूंगेके समान लाल लाल हो और बहुत चिकना न हो तो वह पुरुष अपनी बाहुओंके बलसे समुद्रपर्यन्त सारी पृथ्वीका राज्य भोगे ॥ १५२ ॥

रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसम्मितं भवति ॥
भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः १५३

अर्थ-जिस मनुष्यके शरीरमें लाल कमलके रंगके समान रुधिर हो तो राज्यलक्ष्मीके समान स्त्री प्राप्त होती है अथवा लक्ष्मी उसको सब ओरसे सुख प्रदान करती है ॥ १५३ ॥

किंचित् पीतं शोणं शोणितमिह भवति मध्यमे पुंसि ॥
ईषत्कृष्णं रक्तं तत्तु जघन्ये परिज्ञेयम् ॥ १५४ ॥

अर्थ-जिस पुरुषका रुधिर कुछ पीला और कुछ लाल प्रतीत होता है वह मध्यम होता है तथा जिसका रुधिर लाल और काला हो वह पुरुष अच्छा नहीं होता है ॥ १५४ ॥

रोमलक्षण ।

ललितानि स्निग्धानि भ्रमरश्यामानि देहरोमाणि ॥
जायन्ते भूमिभुजां मृदूनि विलसन्ति सूक्ष्माणि १५५

अर्थ-जिसके शरीरमें सुन्दर चिकने भौंरेके समान काले रोम होवें और नरम पतले होवें तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ १५५ ॥

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ॥
पापः पिंगलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ॥ १५६ ॥

अर्थ-जिसके रोम न हों वह संन्यासी होता है और जिसके रोम मोटे, रूखे, खरदरे हों वह पुरुष अधम होता है, तथा जिसके रोम भूरे हों वह पापी होता है और फटी हुई नोक जिनकी ऐसे रोम जिसके हों वह पुरुष दरिद्री होता है ॥ १५६ ॥

सुभगो रोमयुतः स्याद्विद्वान्घनरोमसंयुतो मनुजः ॥
उद्वृत्तरोमभिः पुनरंगैश्च बहुभिश्च वित्तसंकलितः १५७

अर्थ-जिसके रोम मिले हुएसे प्रतीत हों वह पुरुष रूपवान् होता है और जिसके रोम घने हों वह पुरुष विद्वान् होता है तथा जिसके रोम गुच्छेदार हों वह पुरुष बहुत धनवाला होता है॥१५७॥

रोमैकैकं नृपतेर्द्वंद्वं श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमताम् ॥
अधिकान्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्धजेष्वेवम्॥१५८॥

अर्थ-जिसके एकही एक रोम हो वह राजा होता है और जिसके शरीरमें दो दो रोम हों वह वेदपाठी, धनवान् और बुद्धिमान् होता है तथा जिसके रोम अधिक अधिक हों वह निर्धनी होता है एवं मस्तकपरके रोमोंकोभी जानना अथवा शिरके केशोंके लक्षण इसी प्रकार जानना ॥ १५८ ॥

जंघालक्षण ।

ऊरू यस्य समांसे रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते ॥
कोमलतनुरोमचिते स जायते भूपतिः प्रायः॥१५९॥

अर्थ-जिस पुरुषकी जांघें माससे भरी, केलाके खंभके समान भासमान होय और कोमल व छोटे रोमोंकरके सहित हों तो ऐसी जंघाओंवाला पुरुष बहुधा पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ १५९ ॥

स्निग्धा ऊरू मृदुलौ क्रमेण पीनौ प्रयच्छतौ लक्ष्मीम् ॥
विकटौ स्त्रीवल्लभतां गुणवत्तां संहतौ कुरुतौ भवतः॥१६०॥

अर्थ-जिस मनुष्यकी दोनों जाघें चिकनी, नरम और क्रमसे मोटी होय तो ऐसी जंघायें लक्ष्मीके देनेवाली जाननी और जिसकी जंघायें विकट (कुडौल) हों अथवा चौडी हों वह स्त्रीका प्यारा होता है तथा जिसकी जंघायें मिली हुई होय वह पुरुष गुणवान् होता है ॥ १६० ॥

जानुलक्षण ।

निम्नः स्त्रीपरवशगः शशिवृत्तैर्गूढमांसलै राज्यम् ॥
दीर्घैर्महद्भिरायुः सुभगत्वं जानुभिः स्वल्पैः ॥ १६१ ॥

अर्थ-जिसकी जानु नीची वा छोटी होती है वह स्त्रीके वशमें होता है और जिसकी जानु चन्द्रमाके समान गोल और मोटी हों वह राज्य करनेवाला होय, तथा जिसकी जानु लम्बी हों वह बडी आयुवाला होता है, जिसकी जानु पतली वा छोटी हों वह मनुष्य सुन्दर होता है ॥ १६१ ॥

दिशति विदेशे मरणं मनुजानां जानु मांसपरिहीनम् ॥
कुम्भनिभं दुर्गततां तालफलाभं तु बहु दुःखम् ॥ १६२॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी जानु मांसरहित (सूखी) हों वे मनुष्य परदेशमें मरण पाते हैं, जिनकी जानु कुंभ (घडे) के समान हों वे दरिद्रभावको प्राप्त होते हैं, जिनकी जानु तालफलके समान हों वे बहुत दुःख पाते हैं ॥ १६२ ॥

गुदालक्षण ।

अश्वत्थपत्रसदृशं विपुलं गुदमुत्तमम् ॥
पद्मकोशमिदं श्रेष्ठं गुह्यं चाहुर्मुनीश्वराः ॥ १६३ ॥

अर्थ-जिसकी गुदा पीपलके पत्तेके सदृश बडी हो वह उत्तम जानने और कमलफूलके संपुटके आकार प्रतीत हो तो बहुत फल मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १६३ ॥

चरणलक्षण ।

निगूढगुल्फौ पतितौ पद्मकांतितलौ शुभौ ॥
अस्वेदिनौ मृदुतलौ मत्स्यांकमकरांकितौ ॥ १६४ ॥

अर्थ-जिसके चरणकी एडी छोटी और कमलके समान सुन्दर हो और पसीना न आता हो, तथा चरणमें मछली और मकरके चिह्न हों तो मनुष्यको शुभ फल प्राप्त होता है ॥ १६४ ॥

पादचरस्यापि चरणतलं यस्य कोमलं तत्र ॥
पूर्णप्रस्फुटोर्ध्वरेखा स विश्वविश्वम्भराधीशः ॥१६५॥

अर्थ-यदि पांवोंसे चलनेवालेकाभी चरणतल (तलवा) कोमल होय और चरणतलपर पूर्ण ऊर्ध्व (खडी) रेखा होय तो वह पुरुष विश्व (पृथ्वीभर) का स्वामी होता है । भावार्थ यह कि नरम चरणतल शुभ होता है, कुछ नरम हो तो मध्यम, कडा हो तो अशुभ होता है ॥ १६५ ॥

मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं चरणपृष्ठम् ॥
रोमस्वेदै रहितं पृथुलं कमठोन्नतं शस्तम् ॥ १६६ ॥

अर्थ-जिस पुरुषका चरणपृष्ठ (पांवकी पीठ) मांससे पूर्ण, सचिक्कण और जिसमें नसें नहीं चमकें, कोमल तथा रोम पसीनेसे रहित, चौडा, कछुवेकी पीठके समान ऊंचा ऐसा चरणपृष्ठ शुभ होता है, इससे विपरीत अशुभ जानना ॥ १६६ ॥

पादांगुलिलक्षण ।

विरलाश्चिपिटिकाः शुष्का लघवो वक्राः खटाः
पदांगुलयः ॥ यस्य भवन्ति शिरालाः स किंकरत्वं करोत्येव ॥ १६७ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवकी अंगुलियां विरली, चिपटी, सूखी, छोटी, टेढी, हलके आकार न नसें जिनमें निकली होवें वह दासभावको प्राप्त होता है अर्थात् दूसरेकी नौकरी करता है ॥ १६७ ॥

स्त्रीसंभोगानाप्नोत्यंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या ॥
प्रथममशुभं च गृहिणी मरणं वा ह्रस्वया च कलिम् १६८

अर्थ-जिसके पांवके अंगुठेके पासकी अंगुली अंगूठेसे बडी होवे तो वह स्त्रीके साथ आनन्द करे और भोगविलास सुखको प्राप्त होवे और जो अंगूठेसे छोटी होय तो प्रथम अशुभ फल होवे अनन्तर स्त्रीका मरण हो और कलह होवे ॥ १६८ ॥

आयतया मध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुःखम् ॥
घनया समया पुत्रोत्पत्तिः स्तोकं नृणामायुः ॥१६९॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवकी बीचकी अंगुली बडी होवे तो कार्यको विध्वंस करे, छोटी होय तो दुःख होवे, तथा जो बराबर और बहुत समीप होवे तो पुत्रकी उत्पत्ति थोडी होय और आयुभी उस मनुष्यकी थोडी होवे ॥ १६९ ॥

यस्य प्रदेशिनी कनिष्ठिका भवेत् ध्रुवं स्थूला ॥
शिशुभावे तस्य पुनर्जननी पंचत्वमुपयाति ॥१७० ॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवकी प्रदेशिनी (अंगूठेके पासकी अंगुली) और छोटी अंगुली मोटी होय तो लडकपनमेंही उसकी माता मृत्युको प्राप्त होवे ॥ १७० ॥

नखलक्षण ।

विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नता नखाः श्लक्ष्णाः ॥ मुकुराकाराः सूक्ष्माः सौख्यं यच्छन्ति मनुजानाम् ॥ १७१ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवके नख सुन्दर मूंगेके रंगके समान मनोहर, चिकने, कछुवेकीसी पीठके तुल्य ऊंचे, दर्पणके आकार, पतले और छोटे होंय ऐसे नख पुरुषोंको सुख देनेवाले होते हैं ॥ १७१ ॥

स्थूलैर्नखैर्विदीर्णैः शूर्पाकारैश्च दीर्घनखैः ॥
असितैः सितैर्दरिद्रा भवन्ति तेजोरुचा रहितैः ॥ १७२ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवके नख मोटे और फटे हुए होंय और सूपके आकार बडे तथा काले अथवा सपेद व चमकदार न हों ऐसे नखवाले पुरुष दरिद्री होते हैं ॥ १७२ ॥

स्त्रीपुरुषसंख्यारेखा ।

रेखा कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावन्त्यः ॥
तावन्त्यो महिलाः स्युर्महिलायाः पुनरपि मनुष्याः ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी छोटी अंगुलीकी और आयुकी रेखाके बीचमें जितनी रेखा होंय उतनीही स्त्री होती हैं अर्थात् उतने विवाह जानने और जो स्त्रीके ऐसी रेखा होंय तो उतने पुरुष उस स्त्रीके जानने ॥ १७३ ॥

सन्तानरेखा ।

मूलेऽङ्गुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावन्त्यः ॥
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः १७४॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके हाथके अंगूठेकी जडमें जितनी रेखायें मोटी होवें उतने पुत्र उनके उत्पन्न होवें और जो पतली रेखायें होवें उतनीही कन्यायें उत्पन्न होवें ॥ १७४ ॥

भ्रातृरेखा ।

यावन्तो मणिबन्धायुर्लेखान्तः प्रतीक्षिताः स्थूलाः ॥
तावन्तः संख्याकान्भ्रातॄन् वदन्ति सूक्ष्मा पुनर्भगिनी॥

अर्थ-पहुँचे और आयुरेखाके बीचमें जितनी रेखायें मोटी दीख पडें उतनेही भाई उसके जानना, फिर वहींपर जितनी रेखायें पतली दीख पडें उतनी बहिनें जानना ॥ १७५ ॥

अल्पमृत्युरेखा ।

रेखाभिश्छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
यावन्तस्ताः पूर्णा नियतं जीवन्ति ताभिरेखाभिः १७६॥

अर्थ-आयुकी रेखा जितने स्थानमें छिन्न भिन्न हो अर्थात् कट गई हो उतनीही अल्पायु जानने और जो आयुरेखा पूर्ण हो, कहीं कटी न हो तो जहांतक रेखा पूर्ण हो उतनी आयु उस पुरुषकी जानना ॥ १७६ ॥

शरीरवर्ण ।

गौरः श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां त्रेधा ॥
आद्यौ द्वावपि शस्तौ शुभो न कृष्णो न संकीर्णः १७७

अर्थ-गौर (गोरा), श्याम (सांवला), कृष्ण (काला) ये तीन प्रकारके रंग मनुष्यशरीरके होते हैं, गोरा और सांवला ये दो रंग आदिके अच्छे होते हैं, काला रंग अच्छा नहीं होता तथा कुछ काला कुछ गोराभी रंग अच्छा नहीं होता है ॥ १७७ ॥

पङ्कजकिंजल्कनिभो गौरश्यामः प्रियंगुकुसुमसमः ॥
कृष्णस्तु कज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोऽपि नो शस्तः १७८

र्थ-कमलफूलके जीरेके सदृश गोरा रंग और धायके फूलके समान सांवलारंग तथा काजलके तुल्य काला रंग होता है इनमें जो रंग शुद्धभी चमकदार हो वह अच्छा नहीं होता ॥ १७८ ॥

गन्धलक्षण ।

कर्पूरागरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगन्धाः ॥
द्विपमदगन्धा भूमौ पुरुषाः स्युर्भोगिनः प्रायः ॥ १७९ ॥

अर्थ-जिसके शरीरमें कपूर, अगरु, चन्दन, कस्तूरी, चमेली, तमालदल (आबनूसके पत्ते) कीसी गन्ध हो, अथवा हाथीके मद-कीसी गंध जिन मनुष्योंकी भूमिमें होवे तो ऐसे मनुष्य प्रायः भोगी होते हैं ॥ १७९ ॥

मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ॥
दुर्गन्धाश्च नरास्ते दुर्भगतानिःस्वताभाजः ॥ १८० ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंके शरीरमें मछलीके अंडा, रुधिर, नींब, चर्बी, कौवेके अंडा, बगुला इनकी गन्धिके समान गन्धि होवे तो ऐसे मनुष्य भाग्यहीन और निर्धनी होते हैं ॥ १८० ॥

गतिलक्षण ।

गतिभिर्भवन्ति तुल्या ये च समा द्विरदनकुलहंसानाम् ॥
वृषभस्यापि नरास्ते सततं धर्मार्थकामपराः ॥ १८१ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी चाल हाथी, न्यौला, हंस इनकी चालके समान हो, अथवा वृषभ (बैल) की चालके समान हो तो ऐसी चालवाले पुरुष निरन्तर धर्म, अर्थ, काममें निरत रहते हैं॥१८१॥

धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनमस्तब्धम् ॥
ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलम्बितं स्याद्दरिद्राणाम् ॥ १८२ ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी चाल देखनेमें अच्छी, एक समान, शब्दरहित, जिसमें रुकावट नहीं ऐसी गतिवाले पुरुष धनवान् होते हैं और छोटे छोटे डग धीरे धीरे रखकर चलनेवाले पुरुष दारिद्री (धनहीन) होते हैं ॥ १८२ ॥

सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या ॥
दीर्घक्रमा सुशीला भाग्यवतां स्याद्गतिः सुभगा ॥ १८३ ॥

अर्थ-जिन पुरुषोंके चरण गमनसमय सुखपूर्वक उठें अथवा मोर, बिल्ली, सिंह इनकी चालके समान जिनका लम्बा डग गमनसमय उठे ऐसी अच्छी चालवाले पुरुष भाग्यवान् होते हैं ॥ १८३ ॥

विषमा विकटा मन्दा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा ॥
आभ्यन्तराऽथ बाह्या लग्नपदा वा गतिर्न शुभा ॥ १८४ ॥

अर्थ-जिसकी चाल विषमा (नीची ऊंची), विकटा (टेढी अथवा भय देनेवाली अर्थात् देखनेमें अच्छी नहीं), मन्दा (धीमी) अथवा बहुत फुरतीकी वा रुकरुककर एवं भीतर बाहर पांव भिड-ने जांय ऐसी चालवाले पुरुष अच्छे नहीं होते हैं ॥ १८४ ॥

इति श्रीमत्पण्डितशोभनाथसंग्रहीते सामुद्रिकशास्त्रे पूर्वखंडः समाप्तः ।

अथोत्तरखंडप्रारंभः ।

अब उत्तरखंडका प्रारंभ करते हैं. इस खंडमें स्त्रियोंके अंगके लक्षण वर्णित हैं ।

मस्तकलक्षण ।

उन्नतस्त्र्यंगुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ॥
अर्धचन्द्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्धकः ॥ १ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका भाल (मस्तक) तीन अंगुल ऊंचा हो और कोमल हो, व भृकुटी झुकी हुई हों और अर्ध चन्द्रमाके आकार हो तो सौभाग्य और आरोग्यता आदि सुखका बढावनेहारा होता है ॥ १ ॥

व्यक्तं स्वस्तिकरेखयाकुलमलंनार्या ललाटस्थलं।
सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लम्बायमानं यदि॥
अद्धा देवरमाशुहन्ति नितरां रोमाकुलं रोगदं।
रेखाहीनमनङ्गभङ्गजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा॥ २॥

अर्थ–स्त्रीके मस्तकमें यदि स्वस्तिक (卐) रेखा प्रगट हो तो वह सौभाग्यवती और सुन्दर भोगवाली होती है, एवं वही रेखा जो लटकती हुईसी अथवा लंबायमान हो तो वह स्त्री शीघ्र अपने देवरको नाश करती है, तथा स्त्रीका मस्तक यदि बहुत रोमोंसे युक्त हो तो रोगको देवे और जो मस्तक रेखाहीन हो तो कामदेवको भंग करे ऐसा सर्वदा पण्डितोंकरके जानना चाहिये ॥ २॥

करिपुंगवकुंभसमान उत प्रवरोन्नत एव कदम्ब-
निभः॥ इह मौलिरजस्रमिलाविमला विविधा
बहुधान्ययुता सुदृशः॥ ३॥

अर्थ–सुन्दर हाथीके शिरके समान अथवा कुंभसमान सुनयनी स्त्रियोंका मस्तक ऊंचा हो एवं कदम्बके आकार हो तो ऐसा मस्तक होनेसे उनकी गृहभूमिमें सदा सुन्दर लक्ष्मीका निवास हो तथा अनेक प्रकारके धान्य अन्नादिकी प्रायः वृद्धि होवे ॥ ३॥

पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसंग-
कारिका॥ लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बन्धकी
निजकुलान्तकारिका॥ ४॥

अर्थ–स्त्रीका मस्तक जो स्थूल हो तो विशेषकरके मानका हरनेवाला होता है और वह स्त्री दुर्जनोंकी संगति करनेवाली होती है तथा जो मस्तक लम्बा हो तोभी सब नाश करनेवाली हो अथवा व्यभिचारिणी हो और अपने कुलको नाश करनेवाली होवे ॥ ४॥

कपाले त्रिशूललक्षण ।

भालस्थेन त्रिशूलेन शम्भुना निर्मितेन वै॥
यस्याः शाली सहस्राणामीशितामाप्नुयादरम्॥ ५॥

अर्थ–शिवजीका निर्माण किया हुआ जो त्रिशूल उसके आकारवाला चिह्न यदि सौभाग्यवती स्त्रीके मस्तकपर हो तो वह स्त्री हजारों सखियोंकी स्वामिनी होती है और उन सखियोंसे आदर पाती है ॥ ५॥

ललाटे भगशकटलक्षण ।

शकटवद्यदि योनिर्ललाटगो मृगदृशो मृदुलोम-
गणो भवेत्॥ वरदुकूलमणिव्रजमण्डिता क्षिति-
भृतां वनिता वनितावृता॥ ६॥

अर्थ–यदि मृगनयनी स्त्रीके मस्तकपर कोमल रोमोंके समूहसे युक्त गाडी अथवा योनिके सदृश आकार हो तो वह स्त्री सुन्दर वस्त्र और मणिरत्नोंके समूहसे शोभावाली राजरानी होवे तथा अनेक वनिताओं (सखियों अथवा दासियों) से युक्त होवे ॥ ६॥

विलसति भगभाले दक्षिणावर्तरूपः।
कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसंघः॥
नरपतिकुलभर्तुः कामिनी मानिनीना-।
मिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात्॥ ७॥

अर्थ–जिस मृगनयनी स्त्रीके मस्तकपर दाहिनी ओरको घूमा हुआ कोमल रोमसमूहसे युक्त भगका चिह्न हो तो वह स्त्री विशेषकरके राजाधिराजकी स्त्री (महारानी) होवे तथा घमंड करनेवाली स्त्रियोंमें यह राजरानी श्रेष्ठ होवे ऐसीही स्त्री धन्य होवे है ॥ ७॥

शिरःकेशलक्षण ।

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा ।
वक्राकाराः कुवलयदृशां किंचिदाकुंचिताग्राः ॥
भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा ।
रूक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ॥ ८ ॥

अर्थ-जिस मृगनयनी स्त्रीके शिरके केश भौराओंके समूह समान काले रंगके चमकीले टेढे और कुछ घुंघुवारे नोंकदार होवें तो शीघ्र भाग्य (सौभाग्य) देनेवाले होते हैं और जो विरले, पीतवर्ण अर्थात् भूरे रंगके, मोटे वा रूखे किंवा बहुत छोटे हों तो बन्धन, विधवापन व दुःख देनेवाले जानने ॥ ८ ॥

मशकतिलादिचिह्न ।

मशकोऽपि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति समध्यगो भ्रुवोर्वा ॥ तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ ९ ॥

अर्थ-यदि स्त्रीके ललाटपर अथवा भौंहोंके बीचमें छोटे व्रणके सदृश मस्सा हो तो वह स्त्री सुख, धन अनेक प्रकारके भोग और निरन्तर पति, पुत्र व सेवकजनोंका जो सुख है उस सुखको प्राप्त होवे अर्थात् सदा सुखी रहे ॥ ९ ॥

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एव मिष्टदः स्यात् ॥ हृदयं तिलकेन शोभितं लशुनेनापि च राज्यकारणम् ॥ १० ॥

अर्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके बीच गालपर लाल लाल मस्सा हो तो इच्छानुसार कार्यसिद्धि होती है और जो तिल वा लहसन हृदयपर हो तो राज्य प्राप्त होता है ॥ १० ॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा ॥
जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥ ११ ॥

अर्थ-सुन्दर भ्रुकुटीवाली स्त्रीके स्तनमण्डलपर जो लाल तिल हो तो निश्चय उस स्त्रीके चार कन्यायें उत्पन्न होवें और तीन पुत्र उत्पन्न होवें ऐसा पूर्वाचार्योंने कथन किया है ॥ ११ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलांछनं शुभदृशस्तिलकं कमलप्रभम् ॥ प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विधवा तदनंतरम् ॥ १२ ॥

अर्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके बायें कुचपर लाल चिह्न हो अथवा कमलके रंगसमान तिल हो तो उस स्त्रीके प्रथम एक सुपुत्र प्रगट होवे अनन्तर वह विधवा हो जावे ॥ १२ ॥

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशस्तिलकं गुददक्षिणे ॥
नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् १३

अर्थ-जिस सुनयनी (स्त्री) के छोटे भौंरोंके समूहके आकार (काला) तिल गुदाके दक्षिण भागमें हो तो वह राजाकी स्त्री होवे और उसके घरमें लक्ष्मीका वास हो तथा वह सुन्दर राजपुत्रको जने ॥ १३ ॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकान्तिरर्थदायी ॥ अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी पतिहंत्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ १४ ॥

अर्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके नाकके आगे मूंगेकी कान्तिके सदृश मस्सा हो तो द्रव्यको देनेवाला जानना और जो भौंरेके पंखसमान अथवा नवीन मेघके समान रूपवाला हो तो वह स्त्री निश्चयकरके अपने पतिको मारनेवाली और विशेषकरके व्यभिचारिणी होती है ॥ १४ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ॥
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥ १५ ॥

अर्थ-यदि झुकी हुई भौंहवाली स्त्रीकी नाभिके नीचे तिल वा लहसन प्रगट दीख पडे अथवा मस्सा होवे तो ऐसा चिह्न सौभाग्यसूचक जानना अर्थात् ऐसे चिह्नवाली स्त्री सौभाग्यवती रहती है ॥ १५ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कंठगतं तिलकं तदा ॥ श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशो मशकामललांछनैः ॥ १६ ॥

अर्थ-यदि सुनयनी (स्त्री) की हथेली वा कपोल (गाल) पर अथवा कंठ यद्वा कानके नीचे तिल हो तो वह स्त्री पतिकी प्यारी होवे एवं मस्सा अथवा प्रगट लहसन आदि चिह्न हों तोभी यही फल जानना ॥ १६ ॥

नेत्रलक्षण ।

रक्तान्ते लोचने भद्रे तदन्तः कृष्णतारके ॥
कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥ १७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके नेत्रोंका अंतभाग लाल रंगका हो तो कल्याणदायक होता है, तिन नेत्रोंके भीतरकी पुतली काली वा शंख और दूधके समान श्वेतवर्ण होवे और कोमल व काले पलक हों तोभी कल्याण होवे ऐसा जानना ॥ १७ ॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥ १८ ॥

अर्थ-ऊंचे नेत्रवाली स्त्री थोडी आयुवाली होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र ऊंचे हों उसकी आयु (उमर) थोडी होती है और गोल

नेत्रवाली स्त्री कुलटा (व्यभिचारिणी) होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र गोल हों वह स्त्री परपुरुषगामिनी होती है, एवं अजा (बकरी) के समान नेत्रवाली, कुंजी वा भैंसेके नेत्रसमान नेत्रवाली स्त्री दुर्भगा होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र बकरीके नेत्र समान हों वा कुंज नेत्र हों, यद्वा भैंसेकेसे नेत्र हों तो वह स्त्री अभागी होती है ॥ १८ ॥

पिंगाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ॥
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥ १९ ॥

अर्थ-पीले रंगके नेत्रवाली वा कपोत (कबूतर) केसे नेत्रवाली स्त्री दुष्टस्वभाववाली अथवा शीलरहित और कामहीन होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र पीले हों वा कबूतरके नेत्र समान हों तो ऐसी स्त्री शीलरहित होती है और उससे कामकी सिद्धि नहीं होवे तथा कोटराक्षी (गहिरे नेत्रवाली) स्त्री महादुष्टा होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र गहिरे हों वह अति क्रूरस्वभाववाली होती है और लाल नेत्रवाली स्त्री पतिघातिनी होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र लाल लाल हों वह स्त्री पतिको मारनेवाली होती है, लाल नेत्रवाली स्त्रीका पति मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

बिडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ॥
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुंश्चली वामकाणिका ॥ २० ॥

अर्थ-बिडाल (मार्जारी) केसे नेत्रवाली और गज (हाथी) केसे नेत्रवाली कामिनी (स्त्री) कुलको नाश करनेवाली होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र बिल्लीके नेत्रके समान हों अथवा हाथीके नेत्रके समान जिसके नेत्र हों उस स्त्रीका कुलनाश हो जाता है तथा दाहिने नेत्रसे कानी स्त्री वन्ध्या होती है अर्थात् जिस स्त्रीका दाहिना नेत्र न होवे, उस स्त्रीके पुत्र नहीं उत्पन्न होवे एवं बायें नेत्रसे

कानी स्त्री पुंश्चली (व्यभिचारिणी) होती है अर्थात् जिस स्त्रीका बायां नेत्र नहीं होता है वह दूसरे पुरुषोंके साथ रमण करनेवाली होती है ॥ २० ॥

सदा धनवती नारी मधुपिंगललोचना ॥
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसम्मता ॥ २१ ॥

अर्थ-शहद समान पीले नेत्रवाली स्त्री सदा धनवती होवे अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्र शहदके रंगके समान पीले हों वह स्त्री सदैव धनसे पूर्ण रहती है और पुत्र पौत्रोंके सुखसे युक्त पतिकी इच्छासे वर्ताव करनेवाली अर्थात् पतिव्रता होती है यह आचार्योंने कहा है ॥ २१ ॥

नेत्रपक्ष्म (पलक) लक्षण ।

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ॥
लघुरूपधरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥ २२ ॥

अर्थ-कोमल, काले, चमकीले और सुन्दर, घने, छोटे रूप धारण करनेवाले पलक जिस स्त्रीके हों वह धन्या, मान्या और पतिप्रिया होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्रोंके पलक कोमल, काले रंगके, चमकदार हों और दर्शनीय घने हों और छोटे छोटे हों वह स्त्री पुरुषोंमें सन्मान पाने योग्य और अपने पतिकी प्यारी होती है ॥ २२ ॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ॥
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥ २३ ॥

अर्थ-रोमहीन, विरले, लम्बे, कपिलवर्ण (पीले) और मोटे केशोंवाले पलकोंवाली स्त्री परगामिनी होती है अर्थात् जिस स्त्रीके नेत्रोंके पलक रोमरहित हों, विरले हों, लम्बे हों और पीले रंगके हों और उनके केश (बाल) मोटे हों तो ऐसे पलकोंवाली स्त्री पराये पुरुषसे रमण करनेवाली होती है ॥ २३ ॥

भ्रुकुटीलक्षण ।

वर्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ॥
अनंगरंगजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥ २४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी भ्रू (भौंह) वर्तुल (गोल), कोमल, श्याम वर्ण (सांवले रंगकी) और धनुषके आकार तथा कोमल रोमोंसे युक्त हों तो वह स्त्री कामदेवके आनन्दको उत्पन्न करनेवाली अर्थात् अपने पतिको कामकल्लोल करके प्रसन्न करनेवाली होती है ॥ २४ ॥

पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ॥
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवा ॥ २५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी भौंहपर रोम भूरे हों, विरले सीधे अथवा मिले हुए व बडे हों अथवा रोम नहीं हों, यद्वा झुकी भौंहें हों तो शुभ नहीं जानना ॥ २५ ॥

कर्णलक्षण ।

प्रलम्बौ वर्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ॥
शिरालौ च कृशौ निन्द्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ ॥ २६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कान लम्बे और गोल आकारके हों वे शुभ फल देनेवाले होते हैं, एवं जिस स्त्रीके कान नसोंदार और कृश (सूखे) तथा शष्कुली (फेणिका) रहित हों तो ऐसे कान अच्छे नहीं होते हैं ॥ २६ ॥

दन्तलक्षण ।

उपर्यधः समा दन्ताः स्तोकरूपा पयोरुचः ॥
द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ॥ २७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके ऊपर और नीचेके दांत बराबर हों और मिले हुए हों, परंतु एक दूसरेपर दांत चढा न हो तथा दूधके तुल्य सफेद

चमकदार हों और मुखभरमें बत्तीस हों तो वह स्त्री सदा सौभाग्यवती रहे ॥ २७ ॥

अधोदन्ताऽधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ॥
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥ २८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके नीचेके दांत गिनतीमें अधिक वा बडे हों तो वह स्त्री मातासे रहित हो और दुःखित रहे तथा जो दांत विकटाकार हों अर्थात् देखनेमें कुरूप हों तो विधवा होवे और जो दांत विरले (अलग अलग) होवें अर्थात् कुछ कुछ अन्तरसे हों तो वह स्त्री स्वैरिणी (व्यभिचारिणी) होवे ॥ २८ ॥

जिह्वालक्षण ।

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ॥
स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥ २९॥

अर्थ-स्त्रीकी जीभ कोमल, सीधी, लाल रंगकी अथवा सपेद रंगकी हो तो ऐसी जीभ शुभ फल देनेवाली होती है तथा जो मोटी वा बीचमें चौडी और विकृतरूप (देखनेमें कुरूप वा विकारयुक्त) हो तो ऐसी जीभ सुखको नाश करनेहारी होती है ॥ २९ ॥

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत् ॥
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लम्बमानया ॥ ३० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी जीभ काली हो वह स्त्री नित्य कलह करनेवाली होती है और जिस स्त्रीकी जीभ मोटी हो वह दरिद्रा (धनसे हीन) होती है तथा जिस स्त्रीकी जीभ लंबी हो वह अभक्ष्य (नहीं खानेके योग्य) पदार्थको भक्षण करनेवाली होती है ॥ ३० ॥

तालुलक्षण ।

तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम् ॥
नारी प्रव्रजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी तालू कोकनद अर्थात् लाल कमलके समान रंग वा कान्तिवाली और कोमल हो तो भद्रकारक (कल्याण करनेवाली) होती है, एवं जो पीले रंगकी हो तो वह स्त्री प्रव्रजिता अर्थात् विरक्त चित्तवाली होवे तथा सपेद रंगकी हो तो वह स्त्री विधवा हो जावे ॥ ३१ ॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ॥
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ३२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी तालू सांवले रंगकी हो तो वह पुत्ररहित हो अर्थात् उसके पुत्र नहीं होवे, यदि होवे तो जीवे नहीं, और जो तालू रूखी हो तो वह स्त्री दुःखित रहे, तथा जिसकी तालू टेढी हो वह स्त्री कलहप्रिया होवे अर्थात् उसको लडाई अच्छी लगे, एवं जिसकी तालू बहुरूप अर्थात् अनेक रंगकी हो तो वह स्त्री भाग्यहीन होवे ॥ ३२ ॥

घण्टिका (घांटी) लक्षण ।

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घण्टी शुभा मता ॥
अतिस्थूला प्रलम्बा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी घण्टी (तालुस्थजिह्वा) क्रमसे सूक्ष्म (छोटी अथवा पतली) और अरुण (लाल), गोल तथा मोटी हो तो शुभ होती है और जो बहुत लंबी और काले रंगकी हो तो शुभ नहीं होती है ॥ ३३ ॥

वाणीलक्षण ।

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभदृशा दरफुल्लकपोलकम् ॥ अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ३४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी वाणी नेत्र मीचे विना, सुन्दर दृष्टिसहित, कुछ खिले हुए मुखसे, सुन्दर कपोल (गाल) की शोभासे संयुक्त ऐसी हो तथा बात करते समय दांत नहीं निकले और मन्द मुसक्यान हो ऐसी वाणीवाली स्त्री अपने पतिको सर्वदा चाहनेवाली और उत्तम स्वभाववाली होती है ॥ ३४ ॥

नासिकालक्षण ।

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ॥
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रुवो भवेत् ॥३५॥

अर्थ-जिस सुभ्रू (सुन्दरभृकुटीवाली) स्त्रीकी नासिका (नाक) छोटे छेदकी, बराबर सीधी और गोल आकार पुटकी हो तो शुभ होती है और जो आगेका भाग मोटा हो और बीचमें गहिरी व नरम हो तो अच्छी नहीं होती है ॥ ३५ ॥

लोहिताग्रा कुंचिता च महावैधव्यकारिणी ॥
नासिका चिपिटाकारा प्रलम्बा च कलिप्रिया ॥ ३६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नासिकाका अग्रभाग (नोंक) लाल रंगकी हो और टेढी हो तो ऐसी नासिका वैधव्यकारिणी (विधवा करनेवाली) होती है तथा जो चिपिटी आकारवाली नासिका हो और लम्बी हो तो वह स्त्री कलहप्रिया होवे अर्थात् उसको लडाई अच्छी लगे ॥ ३६ ॥

दन्तशब्द ।

किटकिटेति कलं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने तु रदावली ॥ महदमंगलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः ॥ ३७ ॥

अर्थ-जो सुनयनी स्त्री शयन करते समय दांतोंसे किटकिट शब्द करे अर्थात् सोते समय स्त्रीकी रदावली (दांतोंकी पंक्ति) परस्पर लडे तो शरीरके लक्षण जाननेवाले पण्डितोंने यह लक्षण महा अमंगल (विधवा आदि) को करनेवाला जानना अर्थात् विशेषकरके यह कुलक्षण जानना ॥ ३७ ॥

ओष्ठलक्षण ।

वर्तुलो रेखयाक्रान्तो बन्धूकसदृशोऽधरः ॥
स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः ॥३८॥

अर्थ-जिन सुभ्रू (सुन्दर भौंहवाली) स्त्रियोंके अधर (ओंठ) रेखाओंसे युक्त और बन्धूक (एक प्रकारका फूल) के समान हो तथा चिकने हों तो यह नित्यही राजाकी प्यारी होवे ऐसा कहा गया है ॥ ३८ ॥

प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ॥
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः ॥ ३९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका ओंठ लम्बा हो, पुरुषके ओठके तुल्य हो, फटा हुआ हो, मांसवर्जित अर्थात् रूखा सूखा हो तो दुर्भाग्यसूचक जानना अर्थात् अभाग्यका करनेवाला जानना और जो काले रंगके होंठ हों तो वैधव्यसूचक जानना अर्थात् काले होठोंवाली स्त्री विधवा हो जावे ॥ ३९ ॥

कपोललक्षण ।

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्तुलाकृती ॥
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ॥ ४० ॥

अर्थ-जिस मृगनयनी स्त्रीके कपोल (गाल) मांससे भरे और कोमल व गोल आकारके हों तथा ऊंचे हों तो शुभ फल होता है ॥ ४० ॥

निर्मांसौ परुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ॥
सीमन्तिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ॥ ४१ ॥

अर्थ–जिस नवयौवना स्त्रीके दोनों कपोल (गाल) मांसरहित (सूखे) हों और रोमोंसे युक्त हों तथा कुटिलाकृति (टेढे) तिरछे होवें तो अशुभ और अभाग्यको बढानेवाले जानने ॥ ४१ ॥

हनुलक्षण ।

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ॥
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ॥ ४२ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी हनु (ठोडी) सुन्दर,घनी, कोमल और रोमरहित हो तो शुभ होती है और जो रोमसहित, टेढी, छोटी अथवा बहुत मोटी हो तो शुभ नहीं होती है ॥ ४२ ॥

कण्ठलक्षण ।

कण्ठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः ॥
चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति ॥ ४३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका कंठ गोल स्वरूपवाला और सुन्दर ऊंचाई लिये हुए हो और चार अंगुलका लंबा हो वह स्त्री अपने पतिकी प्यारी होती है अर्थात् उसका पति उस स्त्रीका बहुत प्यार करता है ॥ ४३ ॥

गुप्तास्थिर्मांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता ॥
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना ॥ ४४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी ग्रीवा (घींच) की हड्डी छिपी हुई और मांससे भरी हुई तथा तीन रेखाओंसे युक्त बराबर और देखनेमें अच्छी व पुष्ट हो तो ऐसी ग्रीवा शुभ होती है और जो इससे विपरीत हो अर्थात् हड्डी दिखलाती हो, सूखीसी, कुडौल और अपुष्ट हो तो ऐसी ग्रीवा अच्छी नहीं होती है ॥ ४४ ॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका ॥
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥ ४५ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका कंठ स्थूल (मोटा) हो वह स्त्री अपने पतिसे छोडी हुई रहे और जिसका कंठ रक्तवर्ण (लाल) हो वह स्त्री दासी होकर रहे, तथा जिस स्त्रीका कंठ चौडा हो वह स्त्री पतिरहित (विधवा) हो जावे और जिसका कंठ छोटा हो वह स्त्री धनसे हीन (दरिद्रिणी) होवे ॥ ४५ ॥

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहंत्री कुरूपा पृष्ठावर्ता कठिनहृदया स्वामिहंत्री कुलघ्नी ॥ आवर्तो वा भवत उदरे द्वाविहैकोऽपि यस्याः सापि त्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात् ॥ ४६ ॥

अर्थ–जिसके कंठमें रोमोंका आवर्त (चक्र) घूमा हुआ हो तो वहस्त्री कुलटा (व्यभिचारकर्म करनेवाली) और पतिको हनन करनेवाली व कुरूप होवे, एवं जिसके पीठमें रोमोंका चक्र हो तो वह कठोरहृदयवाली अर्थात् कर्कशा दयासे रहित अपने पतिका नाश करनेवाली तथा कुलको विनाश करनेवाली होवे, तथा जिस स्त्रीके पेटमें दो वा एकभी भौंरा हो तो ऐसी स्त्रीको तथा पूर्वोक्त कुलक्षणोंसे युक्त स्त्रीको दूरहीसे परित्याग कर देना चाहिये ऐसा लक्षण जाननेवाले पंडितोंने कथन किया है ॥ ४६ ॥

सीमन्ते च ललाटे च कण्ठे वापि नतभ्रुवः ॥
लोम्नामावर्तको दक्षो वामो वैधव्यसूचकः ॥ ४७ ॥

अर्थ–जिस सुभ्रू स्त्रीकी मांगमें वा माथेमें वा कंठमें रोमोंका आवर्त अर्थात् भौंरा दाहिने वा बायें ओरको घूमा हुआ हो तो वह वैधव्यसूचक होता है यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है, कि जिस स्त्रीकी मांगमें भौंरी होती है वह स्त्री विधवा हो जाती है ॥ ४७ ॥

हस्तरेखालक्षण ।

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फुटतरा।
करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहुशुभम् ॥
यदा वृत्ताकारा पतिरति सुखं विन्दति परं।
विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥ ४८॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें गहिरी, लाल रंग, कोमल और देखनेमें साफ रेखा होवे तो उस मृगनयनी स्त्रीको बहुत शुभ फल देती है तथा जो वृत्ताकार अर्थात् गोल आकारवाली रेखा हो तो वह स्त्री अपने पतिसे बहुत सुख पाती है और सौभाग्यवती रहती है, बलकरके सहित होती है और कल्याणपदकोभी प्राप्त होती है ॥ ४८॥

करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता ॥ नृपमपत्यमलं जनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥ ४९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेलीमें कमलका चिह्न होता है वह स्त्री राजाकी बहुत प्यारी राजपत्नी (रानी) होती है और वह (रानी) बलवान् पुरुषोंके मानको मर्दन करनेवाले ऐसा राजकुमार उत्पन्न करती है ॥ ४९ ॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नन्द्यावर्तः प्रजायते ॥
चक्रवर्तिनृपपत्नी सा यस्याः पाणितलेऽमले ॥ ५० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी निर्मल हथेलीमें दाहिनी ओरको घूमा हुआ चिह्न प्रगट दीख पडे तो वह स्त्री चक्रवर्ती राजा (महाराजा) की स्त्री अर्थात् महारानी होती है ॥ ५० ॥

आतपत्रं च कमठः शंखोऽपि यदि वा भवेत् ॥
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥ ५१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेलीमें छत्र, कछुआ अथवा शंखका चिह्न प्रगट दीख पडे तो वह स्त्री राजाकी माता अर्थात् राजपुत्र उत्पन्न करनेवाली, गुणवती, सुन्दर रूपवाली और पतिव्रता होती है॥५१॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत् ॥
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालङ्कारमण्डिता ॥ ५२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके बायें हाथमें तराजू और मालाके आकार रेखा प्रगट दीख पडे तो वह वैश्य (साहूकार वा व्यापारी) की स्त्री होकर लक्ष्मीसे परिपूर्ण और नाना प्रकारके अलंकारों (आभूषणों) से शोभावाली होती है ॥ ५२ ॥

करतले गजवाजिवृषाकृतिः कृतिविदामबला किल कोविदा ॥ भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥ ५३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेलीमें हाथी, घोडा, बैल इनके आकार रेखा हो तो वह स्त्री किये हुए कामको जाननेवाली और पंडिता होती है तथा यदि उत्तम भृकुटीवाली स्त्रीके हाथमें राजमहल अथवा चन्द्रमाके आकार रेखा प्रगट दीख पडे तो ऐसी रेखा शुभफलको देनेवाली होती है ॥ ५३ ॥

भवति सा विमलांकुशचामरा मलशरासनवद्यदि रेखिका ॥ गुणविभूषितभूपतिवल्लभा करतले शकटेन विशोऽबला ॥ ५४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेलीमें निर्मल अंकुश, चमर और सीधे बाणके समान आकार रेखा हो तो वह स्त्री उत्तम गुणोंसे शोभावाली राजवल्लभा अर्थात् राजाकी प्यारी (रानी) होवे और यदि स्त्रीकी हथेलीमें शकट (गाडी) के आकार रेखा हो तो वह स्त्री वैश्य (व्यापारी) की स्त्री होती है ॥ ५४ ॥

अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठा यदि गच्छति ॥
यस्याः सा पतिहंत्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ५५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके अंगूठेकी जडसे छोटी अंगुलीके जडपर्यन्त रेखा गई हो वह स्त्री पतिको हनन करनेवाली होती है ऐसी स्त्रीको दूरसेही परित्याग करना चाहिये ॥ ५५ ॥

यदि करे करपालगदामलप्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्ग-वत् ॥ भवति शूलनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥ ५६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेलीमें करपाल (खड्ग), गदा, उत्तम धारवाला भाला, मृदंग, हरिण और शूल इनके आकार रेखा प्रगट दीख पडे तो वह स्त्री निश्चय पृथिवीपर धनवती और धनकी देनेवाली होवे है ॥ ५६ ॥

वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः खरकङ्कपत्रश-लभा विडालकाः ॥ यदि वामपाणितलगा भवन्ति चेत्कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥ ५७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके बायें हाथकी हथेलीमें वृष (बैल), भेक (मेंडक), वृश्चिक (बीछी), भुजङ्ग (सर्प), जम्बुक (सियार), खर (गर्दभ), कंकपत्र (केंचुवा पक्षी), शलभ (टीडी), बिडाल (बिल्ली) इनके आकार रेखा अथवा चिह्न हों तो वह स्त्री कलह करनेवाली और रोगिणी होती है ये लक्षण रोग करनेवाले होते हैं ॥ ५७ ॥

अंगुष्ठलक्षण ।

कोमलः सरलोऽगुष्ठो वर्तुलो यदि योषिताम् ॥
क्रमादेवं कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्तुलाः ॥ ५८ ॥

अर्थ-यदि स्त्रियोंका अंगूठा गोल और कोमल व सीधा तथा अंगूठेके पाससे अन्य अंगुलियां क्रमसे छोटी हों और लंबी व गोल होवें तो शुभ जानना ॥ ५८ ॥

हस्तांगुलिलक्षण ।

पृष्ठरोमाः प्रजाः शस्ताश्चिपिटा उदिता बुधैः ॥
कृशाः कुंचितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥ ५९ ॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयः शुभाः ॥ ६० ॥

अर्थ-यदि स्त्रियोंके पीठपर रोम प्रगट हो गये हों एवं अंगुलियोंका पृष्ठभाग चिपिटा अर्थात् चौडा हो तो पंडितोंने शुभ कहा है और जो अंगुलि पतली, टेढे पर्ववाली अर्थात् अंगुलियोंके पोरुवे टेढे हों और अग्रभाग छोटा हो तो रोग और भयको देने-वाले जानने। जिसके हाथकी अंगुलियां पर्वसमेत ऊंची अर्थात् लंबी हों तो शुभ अर्थात् सौभाग्य आदि फलको देनेवाली जाननी अर्थात् लंबी अंगुलियां शुभ फल देनेवाली होती हैं ॥ ५९ ॥ ६० ॥

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् ॥
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा ॥ ६१ ॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंके हाथका अंगूठा और दो अंगुली ये कमल-की कलीके समान हों तो स्त्रियोंके बहुत भोगके अर्थ पूर्वसमय ब्रह्माजीने बनाया है ॥ ६१ ॥

करतललक्षण ।

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम् ॥ निजपतेः कुसुमायुधवर्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम् ॥ ६२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेली और दोनों भुजा यदि कोमल, निर्म-

ल कमलके समान और ऊंचे हों अथवा हथेली कमलके रंगके समान हो और दोनों भुजायें लंबी हों ये लक्षण स्त्रीके पतिके कामदेवको बढावनेवाले जानने ऐसा ब्रह्माजीका कहा हुआ मुनियोंने कथन किया है ॥ ६२ ॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीन रेखया ॥
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥ ६३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेली साफ रेखाओंसे भरी हो तो कल्याणकारी जानने और जो रेखायें छोटी हों तो अमंगलको करे हैं तथा जो रेखायें न हों तोभी अमंगल जानना और जो बहुत रेखायें हों वह स्त्री विधवा होवे ॥ ६३ ॥

करपृष्ठलक्षण ।

शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि ॥
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी हथेली बहुत नसोंसे युक्त हो और हाथका पृष्ठ अर्थात् पिछला भाग ऊंचा और नसोंसे रहित हो तो शुभ फल होता है ॥ ६४ ॥

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत् ॥
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥ ६५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका करपृष्ठ अर्थात् हाथकी पीठ बहुत रोमोंसे युक्त हो, गहिरी और मांसरहित (सूखीसी) हो तो पतिके जीवको हरण करे है इस प्रकार सुन्दर भौंहवाली स्त्रियोंके करपृष्ठके लक्षण पंडितोंने कहे हैं ॥ ६५ ॥

नखलक्षण ।

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ॥
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रुवः सुखनाशकाः ॥ ६६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके नख शंख और सीपके आकार और बीचमें गहिरे तथा रंगमें अच्छे न हों तो ऐसे नख शुभ नहीं होते हैं तथा जो कपिल वर्ण (पीले रंग) हों और टेढे अर्थात् मुडे हुए व रूखे होवें तो ऐसे नख सुखको नाश करनेवाले होते हैं ॥ ६६ ॥

यदि भवन्ति नखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरला यदि बिन्दवः ॥ अतितरां कुसुमायुधपीडया परजनेन लपन्ति रमन्ति ताः ॥ ६७ ॥

अर्थ-जिन मृगनयनियोंके नखोंमें सपेद रंगके सुहावने बिन्दु होवें तो वे बहुतही कामबाणकी पीडा करके अन्य मनुष्योंके साथ बातचीत करें और रमण करें ॥ ६७ ॥

बाहुमूललक्षण ।

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी ॥
तुंगांसा विधवा ज्ञेया विमांसा सा तथैव च ॥ ६८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके बाहुमूल अथवा कन्धेके किनारे चौडे अथवा कडे हों वह स्त्री धन्या अर्थात् भाग्यवाली होती है और जो बाहुमूल ऊंचे तथा मांसहीन (रूखे) हों तो विधवा होवे ॥ ६८ ॥

स्कन्धलक्षण ।

पुत्रिणी विनतस्कन्धा ह्रस्वस्कन्धा सुखप्रदा ॥
पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा ॥ ६९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कन्धे झुके हुए हों वह पुत्रवती होती है और जिसके कन्धे छोटे हों वे सुख देनेवाले होते हैं तथा जिसके कन्धे पुष्ट हों वह कामदेवकी पीडासे अन्धी होती है और रतिभोगसुखवाली होती है ॥ ६९ ॥

वक्षःस्थललक्षण ।

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समा-
यतम् ॥ भोगमेत्य सकलं वराङ्गना सा पुनः
प्रियवियोगमालभेत् ॥ ७० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका हृदय अर्थात् वक्षःस्थल रोमहीन हो और ऊंचा नीचा न हो तथा लंबाई चौडाई बराबर हो तो वह वराङ्गना अर्थात् श्रेष्ठ स्त्री सम्पूर्ण भोगसुखको प्राप्त होवे फिर वह स्त्री प्रियके वियोगको प्राप्त होवे ॥ ७० ॥

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति विस्ताररूप-
हृदया व्यभिचारिणी स्यात् ॥ अष्टादशाङ्गु-
लमितं हृदयं सुखाय चेद्रोमशं च विषमं न
सुखाय किंचित् ॥ ७१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हृदयपर फटे मुखके रोम होवें तो वह स्त्री अपने पतिको नाश करनेवाली होती है और जिसकी छाती बडी लंबी चौडी हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है, तथा जिसका वक्षःस्थल अठारह अंगुलका हो तो ऐसा हृदय सुखके अर्थ जानना और जिसके वक्षःस्थलपर रोम बहुत हों और विषम अर्थात् बेडौल ऊंचा नीचा हो तो कुछभी सुख उस स्त्रीको प्राप्त न होवे ॥ ७१ ॥

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम् ॥
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौभाग्यसूचकम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-जिन श्रेष्ठ स्त्रियोंका वक्षःस्थल ऊंचा व स्थूल हो तो शुभ होता है और जो गहिरा रूखा व कठोर हो तो बहुत अभागयप-नको सूचित करता है अर्थात् जिस स्त्रीकी छाती गहिरी रूखी व कठोर हो वह अभागी होती है ॥ ७२ ॥

स्तनलक्षण ।

भवत एव समौ सुदृढाविभौ यदि घनौ सुदृशस्तु
पयोधरौ ॥ निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमबा-
णविनोदविवर्धकौ ॥ ७३ ॥

अर्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके स्तन (कुच) बराबर, सुन्दर, दृढ और घने व गोल हों तो वह स्त्री अपने पतिको कामदेवके बाणोंसे आनन्द बढावनेवाली होती है ॥ ७३ ॥

सुभ्रुवो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविभौ ॥
पयोधरौ तदा नार्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ॥ ७४ ॥

अर्थ-जिस सुभ्रू स्त्रीके स्तन विरले हों अर्थात् अलग अलग हों मिले न हों और छोटे हों अग्रभाग उनका कुछ मोटा हो और कठोर हों तथा दाहिनी ओर ऊंचे और झुके हों तो उस स्त्रीको ॥ ७४ ॥

पुत्रदोप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् ॥
सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ॥ ७५ ॥

अर्थ-पुत्रदायक होते हैं और जो बायें ओरको ऊंचे वा झुके हुए हों तो कन्या देनेवाले होते हैं, तथा यदि दोनों स्तनोंके बीच अन्तर हो और बडे हों तथा स्तनोंका मुख स्थूल हों तो शुभफल नहीं जानना ॥ ७५ ॥

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ॥
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ॥ ७६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके स्तन जडमें मोटे फिर क्रमसे पतले होके आगे तीक्ष्ण हों तो उस स्त्रीको बाल्य अवस्थामें सुख देते हैं और पीछे (वृद्धावस्था) में दुःख देते हैं ॥ ७६ ॥

त्रिवलीवलीलक्षण ।

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोदवि-
वर्धिनी ॥ भवति सा कपिला कुटिलाकुला शुभ-
करी विरला महदाकृतिः ॥ ७७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके बारीक त्रिवली हृदयसे भगपर्यन्त तीन पंक्ति तथा सीधी रोमवाली रोमोंकी पंक्ति हो तो वह स्त्री प्रेमभरी उत्तम वार्ताओंसे आनन्द बढानेवाली होती है तथा जो वह त्रिवली भूरे रंगवाली और कुछ टेढी रोमोंवाली हो तो अधिक क्रोध करनेवाली होवे और जो पूर्वोक्त त्रिवली बडी आकृतिवाली हो तो शुभ फल करनेवाली जानना ॥ ७७ ॥

उदरलक्षण ।

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि ॥
भेकोदरी नरेशानां बलिनं चायतोदरी ॥ ७८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका पेट बडा हो तो वह बहुत पुत्रोंको उत्पन्न करती है और जो लंबा व फैला हुआ उदर हो तो उसका पुत्र बलवान् होता है ॥ ७८ ॥

उन्नतेनोदरेणैव वन्ध्या नारी प्रजायते ॥
जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिन्दुकांगना ॥ ७९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका उदर ऊंचा हो तो वह स्त्री वन्ध्या (पुत्ररहित) होती है और जो कठोर (कडा) उदर हो वह स्त्री भिन्दुका (नीच जातिमें अच्छे पुरुष) की स्त्री होती है ॥ ७९ ॥

आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम् ।
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥ ८० ॥

अर्थ-यदि स्त्रीके उदरमें भंवर हो तो वह स्त्री निश्चय दासी होती है और कोमल व मांसयुक्त उदर हो और कोखें बराबर हों तो शुभ फल होता है ॥ ८० ॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा जठरेणातिकृशेन का-
मिनी सा ॥ बहुधा तुलभोगलालिता सानुदिनं
मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ८१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका उदर नसोंसे रहित हो और कोमल व त्वचा-वाला हो अथवा बहुत दुर्बल हो तो वह स्त्री पुत्रवती होती है और अनेक प्रकारके अतुल भोगोंमें उसकी लालसा होती है तथा प्रति-दिन उत्तम मोदक (लड्डूआदि) और फल मेवा आदि पदार्थोंके भक्षण करनेवाली होती है ॥ ८१ ॥

घटाकारं यस्या भवति च मृदङ्गेन सदृशं ।
यवाकारं दैवादुदरमहितं पुत्ररहितम् ॥
अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कूष्माण्डसदृशं ।
निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥ ८२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका पेट घडेके आकार अथवा मृदंगके आकार वा दैववश जौके दानेके आकार हो तो वह स्त्री पुत्रोंसे हीन हो एवं यदि कुम्हडके आकारवाला पेट हो तोभी कल्याणफल नहीं देता है तथा उरु शालके समान कठिन हो तो तत्वके जाननेवाले पुरु-षोंने पूर्वोक्त फलके समान फल वर्णन किया है ॥ ८२ ॥

नाभिलक्षण ।

गभीरा दक्षिणावर्ता नाभिर्भोगविवर्धिनी ॥
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्ता न शोभना ॥ ८३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नाभि गहिरी और दाहिनी ओरको घूमी हुई हो तो वह भोग बढानेवाली होती है तथा जिसकी नाभिके

बीच गांठ प्रगट दीख पडे और नाभि खुली हुई हो अथवा बाईं ओरको घूमी हुई हो ऐसी नाभि शुभ नहीं होती है ॥ ८३ ॥

नितम्बकटिलक्षण ।

समुन्नतनितम्बाढ्या यस्याः सिद्धांगुला कटिः ॥
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥ ८४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके नितम्ब ऊंचे हों और कटि चौवीस अंगुलकी हो वह स्त्री राजाकी पट (श्रेष्ठ) रानी और अनेक सखियोंसे सम्यक् प्रकार संयुक्त होवे अर्थात् वह रानी होवे और बहुतसी दासियां उसकी सेवा करें ॥ ८४ ॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः ॥
लघ्वी रोमाकुला नार्य्या वैधव्यं दिशते कटिः ॥ ८५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी कटि मांसरहित झुकी हुईसी, बैठी हुई, गाडीके आकारवाली, छोटी और बहुत रोमोंवाली हो तो ऐसी कटिवाली स्त्री विधवा होती है ॥ ८५ ॥

सीमन्तिनीनां यदि चारुबिम्बो भवेन्नितम्बो बहुभोगदः स्यात् ॥ समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥ ८६ ॥

अर्थ-यदि सौभाग्यवती स्त्रियोंके नितम्ब सुन्दर बिम्बसम हों तो बहुत भोग देनेवाले होते हैं और जो ऊंचे मोटे और बडे हों तो उन स्त्रियोंके सदैव कामसुखके देनेवाले होते हैं अर्थात् ऐसे नितंब अच्छे होते हैं ॥ ८६ ॥

योनिलक्षण ।

यदा गजस्कन्धसमानरूपो भगोऽथवा कच्छपपृष्ठवेषः ॥ इलापतेः कामविनोददायी वामोन्नतः सोऽपि सुताजनेताः ॥ ८७ ॥

अर्थ-स्त्रीकी योनि (भग) यदि हाथीके कन्धेके समान रूपवाली हो वा कछुएकी पीठके आकार हो वह राजाको कामक्रीडासे आनन्द देनेवाली अर्थात् राजपत्नी होवे, तथा जिसकी भग ऊपरको उठी हुई हो ऐसी योनिवाली स्त्री कन्याओंको उत्पन्न करनेवाली होती है ॥ ८७ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ॥
चुल्हिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥ ८८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी भग पीपलके पत्रके आकार हो अथवा गुप्तमणिके सदृश हो तो शुभ होवे है तथा जो चूल्हेके पेटके समान अथवा हिरणके खुरके समान हो ॥ ८८ ॥

रोमाकुलोऽदृष्टयोनिर्विकृतास्यो महाधमः ॥
कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ ८९ ॥

अर्थ-तथा बहुत रोमोंसे युक्त हो कि जिससे योनि दिखाई न पडे और जिसका मुख विकारवाला हो अर्थात् देखनेमें अच्छी न लगे ऐसी भग अधम जानना, सो सर्वथा कामी पुरुषोंके आनन्दहेतु नहीं होती है ॥ ८९ ॥

कामिन्या कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ॥
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥ ९० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि कंचुकावर्त हो अर्थात् दोनों ओर ऊंची बीचमें खाली हो तो ऐसी योनि दुर्भाग्यको बढावनेवाली होती है और वह गर्भ धारण करनेके योग्य नहीं होती है तथा जो वक्र (टेढे) आकारकी हो तोभी दुर्भाग्य बढावनेवाली और गर्भधारणमें असमर्थ जानना ॥ ९० ॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्पूररूपवदेव भगो वा ॥ लम्बगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोऽपि निरुक्तः ॥ ९१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि वेंत और बांसके पत्रके आकार हो अथवा बीचमें गहिरी एक ओर ऊंची तथा कंठके समान एक ओर चौडी, एक ओर लंबी और ऊंची नीची हो और हाथीके सदृश रोम जिसपर हों तथा जिसकी योनि चिपटी हो तो ऐसी योनि शुभ नहीं जानना ॥ ९१ ॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम् ॥ उत समुन्नतमायतमादरात्पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ॥ ९२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि बहुत कोमल और कोमल रोमोंसे युक्त ऐसी योनि यदि हो तो ऐश्वर्यकी देनेवाली होती है तथा जो ऊंची, बडी और चमकदार अर्थात् कान्तिवाली हो तो वह आदरपूर्वक पतिकलासे शोभित अर्थात् जिसके देखने छूनेसे चित्तकी उमंग बढे ऐसी योनिभी ऐश्वर्यको बढावनेवाली पंडितोंने कही है ॥ ९२ ॥

तदैव दक्षिणावर्तं मांसलं शुभसूचकम् ॥
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥ ९३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि दाहिनी ओरको घूमी हुई और मोटी हो तो शुभ होती है और जो बाईं ओरको घूमी हुई व किसी स्थानपर खंडितसी हो तो स्त्रियोंको ऐसी योनि व्यभिचारिणी करनेवाली होती है ॥ ९३ ॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ॥
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका भग मांसरहित, कुछ टेढासा, रूखा हो तो वैधव्यसूचक जानना अर्थात् विधवा करता है और जो भग बहुत मोटा हुआ बहुत लंबा हो तो शीघ्र भाग्यहीन करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

मृदुला विपुला बस्तिः शोभना च समुन्नता ॥
अशुभा रेखया क्रान्ता शिराला लोमसंकुला ॥ ९५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि कोमल, बडी और ऊंची हो तो शुभ जानना, तथा बहुत रेखा व नसोंवाली व रोमवाली हो तो अशुभ फलको देनेवाली जानना ॥ ९५ ॥

शंखावर्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ॥
वामोन्नतं च कन्यादः पुत्रदो दक्षिणोन्नतः ॥ ९६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी योनि शंखावर्त अर्थात् शंखके समान घूमी हुई एक ओरको मोटी एक ओरको पतली हो तो ऐसी योनि गर्भको धारण नहीं करती है तथा यदि स्त्रीकी योनि बायें ओरको ऊंची हो तो कन्यायें प्रगट होती हैं और जो दाहिनी ओरको ऊंची हो तो पुत्र उत्पन्न होते हैं ॥ ९६ ॥

जंघालक्षण ।

जंघे रम्भोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ॥
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥ ९७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी जांघ कदली (केला) के खंभसमान रोमरहित, गोल, सीधी, मोटी, बराबर और चिकनी होवें वह स्त्री निश्चय रानी होती है ॥ ९७ ॥

जानुलक्षण ।

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम् ॥
भुवनभर्तुरतो विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदाहृतम् ९८

अर्थ-जिस स्त्रीके दोनों जानु मोटे, बहुत गोल और सुन्दर हों तो बहुत शुभ फल देते हैं और महाराजाकी स्त्री (महारानी) के समान वह स्त्री होती है, यदि पूर्वोक्त लक्षणसे विपरीत लक्षणवाले जानु हों तो विपरीत जनना ॥ ९८ ॥

रोमलक्षण ।

एकरोमा प्रिया राज्ञा द्विरोमा सौख्यभागिनी ॥
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥ ९९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जंघाओंपर रोमकूप अर्थात् रोमोंके मूलमें एकही रोम हो तो वह स्त्री राजाकी प्यारी (रानी) होवे और जो दो दो रोम होवें तो सुखभागिनी (ऐश्वर्यवाली) होवे तथा जो तीन तीन रोम हों तो विधवा होवे ॥ ९९ ॥

पार्ष्णिलक्षण ।

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥
कुलटा तुंगपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥ १०० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके घुटने बराबर व सुन्दर हों वह स्त्री भाग्यवाली होती है और जो ऊंचे घुटने हों तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है तथा जिसके घुटने लंबे हों वह स्त्री रोगसे पीडित रहती है॥१००॥

गुल्फलक्षण ।

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ॥
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ॥१०१॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दोनों गुल्फ अर्थात् घुटनोंके नीचेका अंग मांसरहित अर्थात् सूखे और पतले हों तो वह स्त्री अवश्य दुर्भगा होती है तथा जो दोनों गुल्फ मोटे, विना नसोंके, गोल और सुन्दर पुष्ट हों तो सुभगा अर्थात् उत्तम ऐश्वर्यवाली होती है ॥ १०१ ॥

अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ ॥
गुल्फलक्षणमाख्यातं पादलक्षणमुच्यते ॥ १०२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके गुल्फ खुले और शिथिल हों तो वह दुर्भगा होती है यह गुल्फलक्षण कहा, अब आगे चरणलक्षण कहते हैं१०२

चरणलक्षण ।

कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवि-
तानवत् ॥ भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षिति-
भृतां वनिता विभुतावृता ॥ १०३ ॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंके चरणोंमें कमल, शंख, रथ, ध्वजा, चक्रस-मान, बडी मोटी मछली, विमान और चांदनी इनके समान चिह्न हों तो वे राजाओंकी स्त्री (राजरानी) होवे हैं अर्थात् पूर्वोक्त चिह्न जिस स्त्रीके चरणमें हों वह स्त्री राजरानी होती है और ऐश्वर्यसे युक्त होती है ॥ १०३ ॥

पादतललक्षण ।

युवतिपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसु-
मप्रभम् ॥ दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं
बहुधर्मविवर्जितम् ॥ १०४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका चरणतल (तलुवा) कोमल, बराबर, जपा-कुसुम (ओडके फूल) के सदृश लाल हो तो वह स्त्री मोटी और उष्ण प्रकृतिवाली राजाकी प्यारी और बहुत धर्मसे रहित होवे१०४

शूर्पाकारं विवर्णं च विशुष्कं पुरुषं तथा ॥
रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥ १०५ ॥

अर्थ-जिस वरांगनाका चरणतल सूपके आकार और रंगहीन, खरखरा, कठोर तथा रूखा हो तो ऐसा चिह्न अभाग्यसूचक अर्थात् भाग्यहीन करनेवाला होता है ॥ १०५ ॥

गतिलक्षण ।

संचलन्त्या पदा धूलिधारा यदा राजमार्गेऽबलायां बलादुच्छलेत् ॥ पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ १०६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चलते समय मार्गमें धूलिकी धारा उडे अथवा जो स्त्री निज बलसे उछलती हुई चले तो वह पांसुला अर्थात् जारिणी शीघ्र तीन कुल अर्थात् माता पिता व पतिके कुलको नाश करके सदा दुष्ट जनोंसे प्रसन्नमन रहनेवाली होती है ॥१०६॥

पादांगुलिलक्षण ।

यस्या अन्योन्यमारूढा पादांगुल्यो भवन्ति चेत् ॥
सा पतीन् बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ १०७॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी अंगुलियां एक दूसरीपर चढी हुई होवें तो वह स्त्री अनेक पतियोंको विनाश करके वारवामा अर्थात् वेश्या होती है ॥ १०७ ॥

अनामिका तथा मध्यमांगुलिकालक्षण ।

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत् ॥
आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥ १०८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी अनामिका और बीचकी अंगुली पृथिवीमें न छुवे उसमें एक उठी रहे तो दो पतिको और दोनों उठी रहें तो तीन पतियोंको नाश करे तथा जारिणी होवे ॥ १०८॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ॥
तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् १०९॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणके बीचकी और अनामिका (छोटी अंगुलीके पासकी) अंगुली छोटी हों तो वह स्त्री पतिसे हीन होवे यह स्वयं भगवान्‌ने वर्णन किया है ॥ १०९ ॥

कनिष्ठांगुलिलक्षण ।

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चालत्यो योषितस्तदा ॥
सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ११० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चलते समय चरणकी छोटी अंगुली पृथिवीको न छुवे तो वह स्त्री शीघ्र अपने पतिको मारकर फिर अन्य पुरुषोंके साथ रमण करनेवाली होवे ॥ ११० ॥

पादनखलक्षण ।

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ॥
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १११ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणोंके नख चिकने, गोल, उठे हुए, तांबेके रंगके समान हों तो वे स्त्रियोंको उत्तम भोग ऐश्वर्यप्रदानवाले होते हैं ॥ १११ ॥

पदपृष्ठलक्षण ।

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम् ॥ अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ ११२ ॥

अर्थ-जिस मृगनयनी स्त्रीके चरणोंकी पीठ निर्मल, कोमल, कमलपत्रकी पीठके समान लाल रंग, कुंकुम वा विद्रुम (मूंगे) के समान हो तो वह स्त्री निश्चय बहुत गुणोंवाली होती है ॥ ११२ ॥

अन्यशुभलक्षण ।

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना ॥
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥११३॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणोंके बीचमें नम्रत्व (गहिरापन) हो वह स्त्री दरिद्रा (धनहीन) होती है और जो चरणांगुलियोंपर नसें

गतिलक्षण ।

संचलन्त्या पदा धूलिधारा यदा राजमार्गेऽबलायां बलादुच्छलेत् ॥ पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ १०६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चलते समय मार्गमें धूलिकी धारा उडे अथवा जो स्त्री निज बलसे उछलती हुई चले तो वह पांसुला अर्थात् जारिणी शीघ्र तीन कुल अर्थात् माता पिता व पतिके कुलको नाश करके सदा दुष्ट जनोंसे प्रसन्नमन रहनेवाली होती है ॥१०६॥

पादांगुलिलक्षण ।

यस्या अन्योन्यमारूढा पादांगुल्यो भवन्ति चेत् ॥ सा पतीन् बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ १०७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी अंगुलियां एक दूसरीपर चढी हुई होवें तो वह स्त्री अनेक पतियोंको विनाश करके वारवामा अर्थात् वेश्या होती है ॥ १०७ ॥

अनामिका तथा मध्यमांगुलिकालक्षण ।

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत् ॥ आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥ १०८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी अनामिका और बीचकी अंगुली पृथिवीमें न छुवे उसमें एक उठी रहे तो दो पतिको और दोनों उठी रहें तो तीन पतियोंको नाश करे तथा जारिणी होवे ॥ १०८॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ॥ तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् १०९॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणके बीचकी और अनामिका (छोटी अंगुलीके पासकी) अंगुली छोटी हों तो वह स्त्री पतिसे हीन होवे यह स्वयं भगवान्ने वर्णन किया है ॥ १०९ ॥

कनिष्ठांगुलिलक्षण ।

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चालत्यो योषितस्तदा ॥ सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ११० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चलते समय चरणकी छोटी अंगुली पृथिवीको न छुवे तो वह स्त्री शीघ्र अपने पतिको मारकर फिर अन्य पुरुषोंके साथ रमण करनेवाली होवे ॥ ११० ॥

पादनखलक्षण ।

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ॥ ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १११ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणोंके नख चिकने, गोल, उठे हुए, तांबेके रंगके समान हों तो वे स्त्रियोंको उत्तम भोग ऐश्वर्यदानवाले होते हैं ॥ १११ ॥

पदपृष्ठलक्षण ।

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम् ॥ अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ ११२ ॥

अर्थ-जिस मृगनयनी स्त्रीके चरणोंकी पीठ निर्मल, कोमल, कमलपत्रकी पीठके समान लाल रंग, कुंकुम वा विद्रुम (मूंगे) के समान हो तो वह स्त्री निश्चय बहुत गुणोंवाली होती है ॥ ११२ ॥

अन्यशुभलक्षण ।

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना ॥ शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥११३॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणोंके बीचमें नम्रत्व (गहिरापन) हो वह स्त्री दरिद्रा (धनहीन) होती है और जो चरणांगुलियोंपर नसें

अधिक हों तो वह स्त्री रास्ता चलनेवाली होती है तथा जो चरणां-गुलियोंपर रोम अधिक हों तो वह दासी होवे है ॥ ११३ ॥

कनिष्ठानामिकाया च यस्या न स्पृशते महीम् ॥
अंगुष्ठं वागतातीत्य तर्जनी कुलटा च सा ॥ ११४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी छोटी अंगुली और अनामिका अंगुली चलते समय भूमिपर न लगती होवे अथवा चलतेपर अंगूठा अपने समीपवाली बडी अंगुलीपर चढ जाता हो तो वह स्त्री कुलटा (व्यभिचारिणी) होती है ॥ ११४ ॥

ऊर्ध्वं ताभ्यां पिण्डिकाभ्यां जंघे चातिशिराचले ॥
रोमशे चातिमांसे च कुंभाकारं तथोदरम् ॥ ११५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी दोनों जंघायें ऊपरकी ओरको बहुत मोटी होवें और जंघाओंमें नाडी दीख पडे तथा रोम बहुत हों, मांस बहुत बढ आवे, कुंभके आकारका पेट जिसका हो ये लक्षण अच्छे नहीं होते हैं ॥ ११५ ॥

वामावर्तं नाभिमल्पं दुःखितानां च गुह्यकम् ॥
ग्रीवा ह्रस्वा च योनी या दीर्घाया च कुलक्षये॥ ११६॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नाभि बाई ओरको घूमी हुई हो और छोटी होय एवं गुदाभी बाई ओरको घूमी हुई और छोटी होय, तथा ग्रीवा छोटी होय और योनि जिसकी बडी होवे ऐसे लक्षणवाली स्त्री दुःखित रहे और उसका कुलक्षय हो जावे ॥ ११६ ॥

प्रस्थूला या प्रचण्डाश्च स्त्रियः स्युर्नात्र संशयः ॥
केकरे पिंगले नेत्रे स्यावेतो लक्षणासती ॥ ११७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका कपोल स्थूल हो तो वह स्त्री प्रचण्डा (कलह करनेवाली) होती है और जिस स्त्रीके नेत्र पीले और ऐंचाताना हों

तथा बिलावके नेत्रसमान नेत्र हों और चंचल हों तो ऐसे लक्षणों-वाली स्त्री अवश्य व्यभिचारिणी होती है ॥ ११७ ॥

सति कूपे गंडयोश्च सा ध्रुवं व्यभिचारिणी ॥
प्रलंबिनी ललाटे च देवरं हंति चांगना ॥ ११८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कपोलोंपर कुछ श्यामवर्ण गढे दीख पडें तो वह स्त्री अवश्य व्यभिचारिणी होती है तथा जिस अंगनाका ललाट लंबायमान हो वह अपने देवर (पतिके छोटे भाई) को विनाश करती है अर्थात् लंबे शिरवाली स्त्रीका देवर मर जावे ॥ ११८ ॥

उदरे श्वशुरं हंति पतिं हंति स्फिचोर्द्वयोः ॥
या तु रोमोत्तरोष्ठी स्यान्न शुभा चोर्द्ध्वरोमिका॥ ११९॥

अर्थ-जिस स्त्रीके उदर (पेट) पर श्यामता होय तो वह स्त्री अपने श्वशुरको हनती है और जो स्त्रीके दोनों होंठ ऊपरको चढे हुए हों तो वह स्त्री अपने पतिको हनन करनेवाली होती है तथा जिस स्त्रीके होंठोंके ऊपर केश होय अर्थात् दाढी मूंछके स्थानपर केश होंय तो अशुभ फल होता है ॥ ११९ ॥

स्तनौ सरोमावशुभौ कर्णौ च विषमौ तथा ॥
करालविषमा दन्ताः क्लेशाय च भयाय च ॥ १२० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दोनों स्तन रोमयुक्त हों तो अशुभ होते हैं और जिसके दोनों कान विषम (बेडौल) बहुत छोटे हों तथा दांत देखनेमें अच्छे न हों और छोटे बडे हों तो क्लेश और भयके देनेवाले जानने ॥ १२० ॥

चौर्याय पुष्टमांसं च दीर्घा भर्तुश्च मृत्यवे ॥
क्रव्यादिरूपैर्हस्तैश्च वृककंकादिसन्निभैः ॥ १२१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दोनों कानोंका मांस पुष्ट हो तो वह स्त्री चोरी

करनेमें प्रवीण होवे और जिसके कान बडे बडे हों तो पतिके मृत्यु-का कारण जानने अर्थात् पतिकी मृत्यु हो जावे तथा कोआ आदि व हाथके समान आकार अथवा भेडिया गीध आदिकोंके कानके समान कान जिस स्त्रीके होंय वहभी विधवा हो जावे॥१२१

शिरालैर्विषमैः शुष्कैर्वित्तहीना भवन्ति हि ॥
दुःखिता पापनिरता ऊर्ध्वनाडी च डाकिनी ॥१२२॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथ पांव आदि अंग प्रत्यंगोंमें नसें बहुत हों और वे नसें विषम और शुष्क हों तो वह स्त्री धनसे हीन और दुःखयुक्त व पापिनी होती है तथा जिस स्त्रीके मस्तकमें ऊर्ध्वनाडी (खडी नसें) हो तो वह स्त्री डाकिनी (कलह करनेवाली व्यभि-चारिणी) होती है ॥ १२२ ॥

समुन्नतोत्तरोष्ठी या कलहा रूक्षकेशिनी ॥
स्त्रीषु दोषा विरूपाक्षा यत्राकारो गुणस्ततः ॥ १२३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका ऊपरका होंठ बडा मोटा दल होके ऊंचा होय और केश रूखे होंय अर्थात् भूरे बाल होवें तो वह स्त्री कलह कर-नेवाली होती है तथा जिस स्त्रीके नेत्र भयंकर होंय तो क्लेश करने-हारे जानने, स्त्रियोंमें कुरूपताही दोष है और सुन्दरताही गुण है१२३

हस्तपादनानाचिह्नवर्णन ।

वाजिकुंजरश्रीवृक्षयज्ञेषु यवतोमरैः ॥
ध्वजचामरमालाभिः शैलकुंडलवेदिभिः ॥ १२४ ॥

अर्थ–वाजि (घोडा), कुंजर (हाथी,) श्रीवृक्ष (बिल्व), यज्ञ-कुंड अथवा यज्ञखंभ, तोमर (गुरगुंजनामक शस्त्र), ध्वजा, चामर (चौंर), शैल (पर्वत), कुंडल, वेदी ये चिह्न हाथमें हों॥ १२४॥

शंखातपत्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसद्रथैः ॥
लक्षणैरंकुशाद्यैश्च स्त्रियः स्यू राजवल्लभाः ॥ १२५ ॥

अर्थ–एवं शंख, आतपत्र (छत्र),पद्म (कमल), मत्स्य (मछ-ली) , स्वस्तिक (पताका) ,उत्तम रथ, अंकुश ये चिह्न हों ऐसे चिह्नयुक्त लक्षणोंवाली स्त्री राजाकी प्यारी अर्थात् राजरानी होती है ॥ १२५ ॥

निगूढमणिबन्धौ च पद्मगर्भोपमौ करौ ॥
न नीचं नोन्नतं स्त्रीणां भवेत्करतलं शुभम् ॥ १२६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका मणिबन्ध (पहुँचा) मोटा, मांससे भरा हो, कमलफूलके गर्भके समान कोमल दोनों हाथ होंय और न ऊंचा न नीचा ऐसा करतल अर्थात् हथेली हो तो शुभ जानना॥ १२६ ॥

रेखान्विता त्वविधवां कुर्यात्संयोगिनीं स्त्रियम् ॥
रेखायुग्मात्येन लब्धा सुखभोगप्रदा शुभा ॥ १२७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें दो रेखाओंका संयोग दीख पडे अर्थात् तर्जनी और अंगूठके बीच दो रेखायें मिली हुई मूलपर्यन्त चली गई हों तो वह सौभाग्यवती स्त्री नाना प्रकारके सुखोंको भोग कर-नेवाली होती है ॥ १२७ ॥

रेखा वा मणिबन्धोत्था गता मध्यांगुली करे ॥
गता पाणितले यावत् योर्ध्वपाणितले स्थिता॥१२८॥

अर्थ–अथवा जिस स्त्रीके मणिबन्ध (पहुँचा) से उठी हुई ऊर्ध्व (खडी) रेखा मध्यमा (बीचकी) अंगुलीकी जडतलेतक चली गई हो अथवा ऊर्ध्व रेखा हथेलीमें जडतक हो अथवा चरणतलमें रेखा हो तो ऐसी रेखा शुभ होती है ॥ १२८ ॥

स्त्रीणां पुंसां तथा सम्यक् राज्याय च सुखाय च ॥
पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा सुखप्रदा ॥ १२९ ॥

अर्थ-तथा जिन स्त्रियों वा पुरुषोंके हाथमें वा चरणतलमें ऊर्ध्व रेखा प्रत्यक्ष प्रगट दीख पडे तो राज्य व सुख पूर्ण प्रकारसे प्राप्त होवे और पुत्र पौत्र आदिकोंसे सम्पूर्ण सुख सदा प्राप्त होवे ॥ १२९ ॥

कनिष्ठामूलरेखा तु कुर्याच्चैव शतायुषम् ॥
अनामिका मध्यमामन्तरालगता सती ॥ १३० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके बायें हाथकी कनिष्ठिका (छोटी) अंगुलीकी जडमें ऊर्ध्व रेखा होय तो सौ वर्षकी आयु होती है और अनामिका (छोटी अंगुलीके पासकी) अंगुली तथा मध्यमा (बीचकी अंगुली) से मिली हुई ऊर्ध्व रेखा हो तो वह स्त्री सती (पतिव्रता) होती है ॥ १३० ॥

ऊना ऊनायुषं कुर्याद्रेखाचांगुष्ठमूलगा ॥
बृहत्यः पुत्रदा अन्याः कन्यादाश्च प्रकीर्तिताः ॥ १३१ ॥

अर्थ-यदि ऊर्ध्व रेखा अंगूठेके मूलसे लगी हुई कुछ छिन्न भिन्न प्रतीत हो तो थोडी आयु कहना और अंगुष्ठके मूलके नीचेमें जितनी रेखायें हैं सो सब लम्बी लम्बी मोटी मोटी पुत्र होनेकी रेखायें हैं और छोटी छोटी पतली पतली रेखायें कन्या होनेकी हैं ऐसा कहा गया है ॥ १३१ ॥

अल्पायुषे लघुच्छिन्ना दीर्घाच्छिन्ना महायुषे ॥
शुभं तु लक्षणं स्त्रीणां प्रोक्तं त्वशुभमन्यथा ॥ १३२ ॥

अर्थ-आयुकी रेखा यदि छोटी हो और छिन्न भिन्न हो तो थोडी आयुका लक्षण जानना और बडी रेखा हो और रेखा छिन्न भिन्न हो तो दीर्घायु होनेका लक्षण जानना, शुभ लक्षण यदि स्त्रियोंके अंगमें प्रतीत होय तो शुभ फल जानना और जो अशुभ लक्षण हों तो अशुभ फल जानना ऐसा कहा है ॥ १३२ ॥

स्त्रीपुरुष लक्षण ।

स्त्रियां पांच प्रकारकी हैं. १ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी, ५ कृत्या नामवाली कही हैं, कामशास्त्रमें प्रायः चार प्रकारकी स्त्रियां कथन करी हैं और लक्षणभी चारहीके पृथक् पृथक् कहे हैं, एवं पांच प्रकारके पुरुष यथा १ देव, २ गन्धर्व, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ पिशाच, लक्षणसहित कहे हैं. तहां प्रथम स्त्रियोंके लक्षण लिखते हैं ॥

पद्मिनीलक्षण ।

सम्पूर्णेन्दुमुखी कुरङ्गनयना पीनस्तनी दक्षिणा ।
मृद्वंगी विकचारविन्दसुरभिः श्यामाऽथ गौरद्युतिः ॥
स्वल्पाहाररता विलासकुशला हंसस्वना गायनी ।
सव्रीडा गुरुदेवपूजनरता सा पद्मिनी प्रोच्यते ॥ १ ॥

अर्थ-पूर्ण चंद्रमाके समान मुख जिसका, मृग (हिरण) के समान नेत्र जिसके, एवं कठोर हैं स्तन जिसके, बुद्धिमती, कोमल अंगवाली, खिले हुए कमलकी सुगन्धिवाली, श्याम अथवा गौर वर्णवाली, थोडा भोजन करनेवाली, कामक्रीडामें चतुर, हंसके समान शब्द जिसका तथा गान करनेवाली, और लाजसे युक्त व गुरुदेवताओंकी पूजामें तत्पर इन लक्षणोंवाली स्त्री पद्मिनी कही है ॥ १ ॥

चित्रिणीलक्षण ।

श्यामा पद्ममुखी कुरङ्गनयना क्षामोदरी वत्सला ।
संगीतागमवेदनी वरतनुस्तुङ्गस्तनी शिल्पिनी ॥
बाह्यालापरता मतङ्गजगतिः सत्कुंकुमाद्रिस्तनी ।
मत्तेयं कविमाधवेन कथिता चित्रोपमा चित्रिणी ॥ २ ॥

अर्थ-श्यामा (सोलह वर्षकी अवस्थावाली जिसको बालगर्भ

कहते हैं अथवा 'शीतकाले भवेदुष्णा ग्रीष्मे वा सुखशीतला । तप्तकांचनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कीर्तिता ।।' अर्थ-शीत कालमें जिसका शरीर गरम हो, गरमीके समयमें जिसकी देह सुखशीतल होवे और तपाये हुए सुवर्णके समान कान्ति जिसकी ऐसी स्त्री श्यामा कही है तथा कमलसमान मुखवाली, मृगके सदृश नेत्रोंवाली, सूक्ष्म उदरवाली, प्यारी मूर्ति जिसकी तथा गानविद्याको जाननेवाली, उत्तम शरीर, ऊंचे स्तनवाली, चित्रविद्यामें चतुर, इधर उधरकी बात करनेवाली, हाथीके बच्चेके समान गतिवाली, कुंकुममदवाली कविमाधवने चित्रकी नाईं चित्रिणी कथन करी है, अर्थात् पूर्वोक्त लक्षणोंवाली स्त्रीको चित्रिणी कहते हैं ॥ २ ॥

शंखिनीलक्षण ।

सूक्ष्मांगी कुटिलेक्षणा लघुकुचा सम्भोगसम्वर्धनी ।
प्रायो दीर्घकचा स्वभावपिशुना कष्टोपभोग्या रतौ ॥
पिङ्गालोलगतिश्च बर्बरकृतप्राङ्गार्चनाह्लादिनी ।
नानास्थाननखप्रचिह्नितततनुः सेयं मता शंखिनी ॥ ३ ॥

अर्थ-सूक्ष्म शरीरवाली, टेढे नेत्रोंवाली, छोटे छोटे स्तनोंवाली, रतिक्रीडा बढानेवाली, लम्बे लम्बे बालोंवाली, खोटे स्वभाववाली, रतिसमयमें कष्टसे भोगी जानेवाली, पिंगलवर्ण, चंचलगति, पीले चन्दनसे चर्चित अंगोंवाली; तथा अनेक स्थानोंपर नखोंकरके चिह्नित देहवाली ऐसे लक्षणवाली स्त्रीको शंखिनी कहते हैं ॥ ३ ॥

हस्तिनीलक्षण ।

पीनस्वतल्पतनुर्भृशं मृदुगतिः क्रूरा नमत्कन्धरा स्तोकं पिंगलकुन्तला पृथुकुचा लज्जाविहीनानना ॥ बिम्बोष्ठी बहुभोज्यभोजनरुचिः कष्टैकसा-

ध्या रतौ गौराङ्गी करिदानगन्धरुचिरा सेयं मता हस्तिनी ॥ ४ ॥

अर्थ-कठोर और सूक्ष्म शरीरवाली, मन्दगतिवाली, क्रोधवृत्तिवाली, चलते समय ऊंचे नीचे कन्धोंवाली, छोटे छोटे पिंगलवर्ण केश जिसके, बडे बडे कुचोंवाली, लाजरहित मुखवाली, कुंदरुकी नाईं होठ जिसके तथा बहुत भोज्य पदार्थोंको भोजन करनेकी रुचि जिसकी, कामक्रीडामें कष्टसे भोगी जानेवाली, जिस प्रकार हाथीके मद चूता है उसी प्रकार स्रव होनेवाली, ऐसे लक्षणवाली स्त्रीको हस्तिनी कहते हैं ॥ ४ ॥

कृत्यालक्षण ।

कलहप्रिया, स्थूलशरीरवाली, अतिक्रोधवाली, श्यामवर्ण, लम्बे २ होंठ व छोटी नाकवाली, शिथिल स्तनविभाग, सूखी कमरवाली, ऊंचे पेटवाली तथा तमोगुणवाली स्त्रीको कृत्या कहते हैं ॥

पुरुषलक्षण ।

देवगन्धर्वयक्षाणां ये राक्षसपिशाचयोः ॥
लक्षणैः संयुतास्ते स्युर्नरास्तै रेव नामभिः ॥ १ ॥

अर्थ-पुरुष पांच प्रकारके होते हैं १ देव, २ गन्धर्व, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ पिशाच इन लक्षणोंवाले मनुष्य उसी नामवाले कहाते हैं । अब संक्षेप रीतिसे पंच महापुरुषोंके लक्षण कहते हैं ॥ १ ॥

देवपुरुषलक्षण ।

दाता, सत्यवादी, ज्ञानी, शूर, पवित्र, सत्यप्रिय, सुवर्णसमान कान्तिमान्, मेघसमान गम्भीर शब्दवाला, लम्बी भुजावाला, बलवान्, कामक्रोधसे रहित, मधुरभोजी, सुगन्धियुक्त, मृगकी गतिके समान चंचल, कमलनयन, साधुस्वभाव, सुन्दररूप, भग-

वद्धक, सतोगुणी इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्यको देवसंज्ञक जानना ऐसा कहा है ॥

गन्धर्वमनुष्यलक्षण ।

श्याम अथवा चम्पकके समान वर्ण, सत रज इन दो गुणोंसे युक्त, रूपवान्, गुणवान्, पवित्रतासे युक्त, गानविद्यामें प्रविण, उत्तम और मधुर भाषण करनेवाला, खट्टे और मीठे भोजनमें रुचिवाला, सबसे मित्रभाव वर्तनेवाला, जिस पुरुषमें ये लक्षण हों उसको गन्धर्वसंज्ञक जानना ॥

यक्षपुरुषलक्षण ।

दयावान्, दीन जनोंकी रक्षा करनेका स्वभाव जिसका, पुष्ट-शरीर, थोडे रोम, रज तम इन दो लक्षणोंसे युक्त, लाल रंगकेसे नेत्र, शरीरका गुलाबी रंग, सिंहसमान गर्जनायुक्त संभाषण, धनवान्, अचलमति इन लक्षणोंवाले मनुष्यको यक्षसंज्ञक जानना ॥

राक्षसमनुष्यलक्षण ।

शरीरका रक्तश्यामवर्ण, भयानकमुख व दाढें, स्थूल व लम्बा शरीर, तमोगुणी, शीघ्र कोप करनेवाला, कामी, क्रोधी, निर्दय स्वभाव, बिलावके समान नेत्र, दुर्मति, मदिरा पान करनेवाला, देवसंज्ञावाले मनुष्यसे वैर करनेवाला, कठोरचित्त इन लक्षणोंसे युक्त पुरुषको राक्षससंज्ञक जानना ॥

पिशाचमनुष्यलक्षण ।

अति कोप करनेवाला, बहुत भोजन करनेवाला, दयाहीन, क्रूर-स्वभाव, दुष्टमतिवाला, मलीनवेष, कुरूप, अति कटु व अम्ल-भोजी, कौएके समान शब्दवाला, बकरीके सदृश गन्धवाला, पापी, विश्वासघाती इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्यको पिशाचसंज्ञक जानना ॥

पांच प्रकारकी स्त्रियां ।

पद्मिनीको देवी, चित्रिणीको गन्धर्वपत्नी (अप्सरा) समान, शंखिनी यक्षिणी, हस्तिनीको राक्षसी, कृत्याको पिशाचिनी संज्ञा-वाली जानना, अर्थात् देवताके समान लक्षण होनेसे देवी, गन्धर्वके समान लक्षण होनेसे अप्सरा, यक्षके समान लक्षण होनेसे यक्षिणी, राक्षसके समान लक्षण होनेसे राक्षसी, पिशाचके समान लक्षण होनेसे कृत्या कहते हैं। एकही लक्षणवाले पुरुष व स्त्रीका संयोग ठीक होता है, विरुद्ध लक्षणोंवाले स्त्री पुरुषमें परस्पर कलह ईर्षा व द्वेष रहता है, विरुद्धसंयोगही अनर्थका हेतु है, भावार्थ यह कि यदि देव, गन्धर्व लक्षणवाले पुरुषका विवाह देवी वा अप्सरालक्षणवाली स्त्रीके साथ होता है तो आनन्दके साथ दिन व्यतीत होते हैं और यदि देव पुरुष हो और राक्षसी वा कृत्या स्त्री हो तो विवाह होनेसे महादुःख रहता है, इस कारण इन लक्षणोंको देखकर जहांतक हो सके समान लक्षणोंसे युक्त नर नारीका विवाहसम्बन्ध करना अन्य-था दुःख, शोक, कलह उत्पन्न होकर दोनोंका जन्म निरर्थक हो जाता है ॥

तरुण स्त्रीकी प्रशंसा ।

वृद्धोऽपि तरुणीं गत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् ॥
वयोऽधिकां स्त्रियं गत्वा तरुणः स्थविरायते ॥ १ ॥

अर्थ–वृद्ध अवस्थावाला पुरुष यदि युवा अवस्थावाली स्त्रीके साथ रमण करनेको पाता है तो तरुण हो जाता है और अधिक आयु-वाली स्त्रीके साथ रमण करनेसे तरुण पुरुष बूढा हो जाता है ॥ १ ॥

चक्रविचार ।

चौपाई ॥

एक चक्र वाचाल बखाने ❀ दुइअ चक्र बलवंत पिछाने ॥

तीनि चक्र वाणिज धन होवे ❀ चारि चक्र दारिद जन जोवे ॥
पांच चक्र सर्वांग विलासा ❀ षष्ठ चक्र रस काम हुलासा ॥
सात चक्र बहु सुखको पुंजा ❀ आठ चक्र रोगी तन कंजा ॥
नव चक्रनसे राजहि करै ❀ दशवां चक्र सिद्ध पग धरै ॥१॥

शंखविचार ।

चौपाई ।

एक शंख नर सुखी कराई ❀ द्वितिय शंख दारिद समुदाई ॥
तीनि शंख गुणहीन बखानै ❀ चारि शंखते बहु गुण जानै ॥
पांच शंखते निर्धन होई ❀ छठा शंख जानै सब कोई ॥ २ ॥

दोहा–सात आदि अरु अंत दश, इतने शंख जु आय ।
राजा कहिये दासको, चलै निसान बजाय ॥ ३ ॥

शीपविचार ।

चौपाई ।

एक शीप गुणवन्त जु होय ❀ दोय शीप वक्ता जग होय ॥
तीनि शीप धन संग्रह करै ❀ चारि शीप यश गुण बहु धरै ॥४॥

दोहा–चारि शीपते अधिक जो, दशपर्यंत जो होय ।
ऋद्धि सिद्धिसे सुख करै, महा पुरुप जग जोय ॥ ५ ॥

कररेखा ।

पहुँचा महँ रेखा इक होवै ❀ राज्य भोग सुखसे जग सोवै ॥
रेखा पहुंचा दुइ यदि जानौ ❀ वक्ता गुणि धनवंत बखानौ ॥
तीनि रेख पहुंचा महँ देखौ ❀ महासुखी कर्ता जग लेखौ ॥
चारि रेख पहुंचा महँ आई ❀ महाकष्ट दुःखी जग जाई ॥६॥

दोहा–लक्षण रेखा कर्मकी, अंगुलिनमाह विचार ।
चारि चारि गनि लीजिये, जानौ सुखको सार ॥ ७ ॥

आठ चौक बत्तीस है, लक्षण जानौ सोय ।
सुख दुख ए जग आयके, भोग करै सब कोय ॥ ८ ॥
जाके हाथ इकतीस है, नहिं होवै बत्तीस ।
सो प्राणी दुःखी रहै, कर्म न जानै ईश ॥ ९ ॥
जाके कर तेंतीस है, गनती होय छतीस ।
अन धन लक्ष्मी संपदा, कर्मतें जानै ईश ॥ १० ॥
करतलरेखा जाहि सब, परे मुष्टिके माहिं ।
अतिभोगी त्यहि जानिये, ये लक्षण हैं जाहि ॥ ११ ॥
ऋद्धि सिद्धि दाता सुखी, वह जानो सब कोय ।
मुष्टि बीच रेखा सबै, रहे सो राजा होय ॥ १२ ॥
जाके बामे तिल बसै, महादुखीकी खान ।
निशिदिन चिन्तामें रहै, कहै समुद्र बखान ॥ १३ ॥

नखविचार ।

दोहा–अरुणो नख ज्यहि पुरुषको, भोगी सुखकी खान ।
पुत्रवान धनवान गृह, और होय सन्मान ॥ १४ ॥
नख कारो जिस पुरुषको, वाके होय कुशील ।
महादुखी सो जानिये, सबसे रहै दुशील ॥ १५ ॥
नख सपेद जा पुरुषके, बडो दुखी सो होय ।
ज्वरपीडा व्यापै सदा, सुखी न होवै सोय ॥ १६ ॥
पीत वर्ण नख पुरुषको, सो परदेश कराय ।
ना घर ना बाहर रहै, चिन्ताके वश थाय ॥ १७ ॥
लाल नयन नख पुरुप ज्यहि, तेजवंत सो होय ।
महादुखी सो जानिये, शुभ लक्षण सब कोय ॥ १८ ॥
हरित वर्ण नख जासुके, सो पापी जिय जानि ।
सदा दुखी वह जानिये, कहै समुद्र बखानि ॥ १९ ॥

हस्तविचार ।

दोहा–जा नरको कर देखिये, फणाकार सो होय ।
धनसंग्रह भोगी सुखी, यह जानौ सब कोय ॥ २० ॥
जा नरको कर देखिये, पत्राकार जु होय ।
राजभोग सो नर करै, यह जानौ सब कोय ॥ २१ ॥
जा नरको कर देखिये, मंडलाकार सो होय ।
नित सिवकाई सो करै, यह जानौ सब कोय ॥ २२ ॥

भुजालक्षण ।

दोहा–लम्बी भुजा विचित्र नर, छोटी भुजका दास ।
होय सुशील सुहावना, भुज समान परकास ॥ २३ ॥
लम्बी भुजा जु दाहिनी, बडो शूर सो जान ।
बाई भुज लम्बी रहे, त्यहि कपटी पहिचान ॥ २४ ॥
सामुद्रिक पुस्तक लिखी शोभनाथ हर्षाय ।
संग्रह करि सज्जन हित, थापि धरयो मन लाय ॥ २५ ॥
कान्यकुब्ज भूसुर प्रगट, कान्यकुब्जके माहिं ।
मिश्रवंश अवतंसवर, शोभनाथ गुरुपाहिं ॥ २६ ॥
अतिश्रम करि ज्योतिष पढी, कृपा कीन गुरुदेव ।
विन गुरुदाया जगतमहँ, कठिन जानिवो भेव ॥ २७ ॥

इति श्रीमत्पण्डितशोभनाथसंग्रहीते सामुद्रिकशास्त्रे उत्तरखंडः समाप्तः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

हस्तविचार ।

दोहा–जा नरको कर देखिये, फणाकार सो होय ।
धनसंग्रह भोगी सुखी, यह जानौ सब कोय ॥ २० ॥
जा नरको कर देखिये, पत्राकार जु होय ।
राजभोग सो नर करे, यह जानौ सब कोय ॥ २१ ॥
जा नरको कर देखिये, मंडलाकार सो होय ।
नित सिवकाई सो करे, यह जानौ सब कोय ॥ २२ ॥

भुजालक्षण ।

दोहा–लम्बी भुजा विचित्र नर, छोटी भुजका दास ।
होय सुशील सुहावना, भुज समान परकास ॥ २३ ॥
लम्बी भुजा जु दाहिनी, बडो शूर सो जान ।
बाई भुज लम्बी रहे, त्यहि कपटी पहिचान ॥ २४ ॥
सामुद्रिक पुस्तक लिखी शोभनाथ हर्षाय ।
संग्रह करि सज्जन हित, थापि धर्‍यो मन लाय ॥ २५ ॥
कान्यकुब्ज भूसुर प्रगट, कान्यकुब्जके माहिं ।
मिश्रवंश अवतंसवर, शोभनाथ गुरुपाहिं ॥ २६ ॥
अतिश्रम करि ज्योतिष पढी, कृपा कीन गुरुदेव ।
विन गुरुदाया जगतमहँ, कठिन जानिवो भेव ॥ २७ ॥

इति श्रीमत्पण्डितशोभनाथसंग्रहीते सामुद्रिकशास्त्रे
उत्तरखंडः समाप्तः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

श्रीवाल्मीकीयरामायण तीन टीकाओंसहित ।

भगवान् भक्तवत्सल, भयत्राता, भानुकुलभूषण, मर्यादापुरुषोत्तम महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजीके गुणसागरको गागरमें भरदेना नहीं बन सकता है तथापि आदि कवि ब्रह्मर्षि वाल्मीकिजीने अपनी रामायणरूपी गागरको भक्तिका, ज्ञानका, धर्मका, साहित्यका, वीरताका, न्यायका सागर बना दिया है। इस छोटेसे विज्ञापनमें वाल्मीकीय रामायणके गुणोंका गान करके सूर्यको दीपक लेकर दिखाना है। रामायण भक्तिका सागर है, मोक्षका मार्ग है और हिन्दुओंका सर्वस्व है। वही ग्रन्थ संस्कृतकी तीन टीकाओं सहित हमारे यहां बिकनेको प्रस्तुत है। इसमें यों तो रामानुजी, तनिश्लोकी और गोविन्दराजीय भूषण तीन टीकायें प्रकाशित हैं परन्तु मुख्य भूषण है। भूषण क्या है वास्तवमें टीकाकारने बडी पटुतासे श्रुति स्मृतिपुराणेतिहास, धर्मशास्त्र, व्याकरण, छन्द अलंकार इत्यादिके प्रमाणसे दिव्यस्वरूप रामचंद्रजीके दिव्यचरित्रवाली आदि कवि वाल्मीकिजीकी दिव्य देहको दिव्यही भूषण पहना दिये हैं उन्हीं दिव्य स्वर्णाभरणोंमें तनिश्लोकी टीका कुंदनका काम देकर मानों सोनेमें सुगन्धि मिला रही है। भूषणटीकाकार श्रीमान् विद्वद्वर गोविन्दराजको स्वप्नमें पवनतनय हनुमानजीने जैसा निदेश किया था उसीके अनुसार इस टीकाकी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तसे रचना हुई है। टीका अवश्य विशिष्टाद्वैत मतकी है परंतु क्या शुद्धाद्वैती, क्या विशिष्टाद्वैती और क्या इतर विद्वान् सबही इसकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करते हैं। ऐसी सर्वगुणगणालंकृत संस्कृत टीकाओंके युक्त रामायण समस्त विद्वानोंके गृहमें विराजकर भगवान् रामचंद्रजीके चरित्रके पठन, पाठन, श्रवण कीर्तनमें हिन्दूजातिको पवित्र कर उनके त्रिविधतापोंका नाश करती हुई उन्हें भवसागरसे अनायास पार कर दें इसीलिये हमने इसका मूल्य घटाकर २५ की जगह १६ रक्खे हैं। चातुर्माससमें रामायण दान करनेका बडा फल है इसलिये धार्मिक हिन्दुओंको यह ग्रंथ खरीदकर धर्मोन्नतिका परिचय देना चाहिये।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.